

आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024-26
"चतुर्वेदी चन्द्रिका" जनवरी 2024

स्थापना - माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 32
मूल्य : 20/-



चतुर्वेदी चन्द्रिका



। वर्ष -25 । अंक-01 । पौष /माघ मास । जनवरी 2024



जा पर कृपा राम की होई। ता पर कृपा करहिं सब कोई॥
जिनके कपट, दम्भ नहिं माया। तिनके हृदय बसहु रघुराया॥

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र

निर्मला कंस्ट्रक्शन कंपनी

गवर्नमेंट रजिस्टर्ड कांट्रैक्टर

Akshay Choubey

Proprieter

B.E. (Civil Engineering) – Priyadarshini College, Nagpur
M.Tech – Birla Institute of Technology, Mesra (Ranchi)



Bazariya Ward No.1, Jawalamai
Chouraha, Damoh (M.P.) -470661



+91 8770955872
+91 8602266219



- किसी भी प्रकार की बिल्डिंग, घर, मॉल, कॉम्प्लेक्स, कालोनी के कंस्ट्रक्शन के लिए सेवा का अवसर प्रदान करें। तथा, कंस्ट्रक्शन मशीनर, जेसीबी, फियोरी, पोकलेन, के लिए संपर्क करें!
- हमेशा स्नेह और सहयोग देने के लिए माननीय सतीश चतुर्वेदी और आभा चतुर्वेदी (नागपुर) को विशेष धन्यवाद !

Private Construction Project



Government Construction Project



दमोह परिवार - स्व. कैलाश नाथ चौबे (बगियावाले), पुत्र - विनोद, देवेन्द्र, गजेन्द्र, राजेंद्र, स्व. नीरज चौबे।
भाई - तनय, सार्थक, विभोर, सुयोग, यश चौबे।

चतुर्थी पुण्यतिथि



स्व. श्रीमती नीरज चतुर्वेदी

पत्नी श्री मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी

30 जून 1955 - 31 जनवरी 2020

नलिन - अनिता

रोहित - रुचिका

प्रतीक - मोनिका

राकेश - अमिता

निशांत - अर्चना

पदम - रेणू

शोक संतप्त परिवार

मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी

नोमिका - अमित, कु. आल्या

मोनिका- तुषार, मास्टर ईशान

दिव्यांशु - ईशा

श्रीमती मधु

प्रशांत - हिमानी

मुकेश - सुधा

अपूर्वी - हिमांशु

अंशुमान - प्राजित

निवास : ई-103 विवेक विहार, सेक्टर- 82, नोयडा (उ.प्र.) - 201304

मो. : 98711-70559

स्मृति शेष



स्व. श्रीमती सरोज
पत्नी स्व. श्री दयानंद जी
स्वर्गवास दि. 16.01.2018



स्व. श्रीमती पद्म
पत्नी स्व. श्री हेमचंद्र जी
स्वर्गवास दि. 30.01.2018



स्व. श्रीमती गीता
पत्नी डॉ. दिवाकरनाथ जी
स्वर्गवास दि. 26.01.2012



श्रद्धावनत

सर्वश्री डॉ. दिवाकर नाथ, भरत चन्द्र, सुभाष चंद्र, सर्वेश चंद्र, हृदय कान्त, मोहन, विवेक चंद्र, पवन कुमार, मनीष, मोहिल एवं हितेष श्रीमती उषा, रेखा, अंजू, प्रतिभा, चित्रा, मनीषा, शालिनी एवं समस्त जौनमाने परिवार पुरा कन्हैया



अंक 01

जनवरी 2024, वर्ष - 25

सभापति

डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी

president@chaturvedimahasabha.in

सचिव

श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी

मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष

श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी

मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मंडल

डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा

पूर्व संपादक

श्री दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ

श्रीमती चित्रा दिलीप चतुर्वेदी, भोपाल

संपादक

शशांक चतुर्वेदी

पत्र व्यवहार का पता:

'चतुर्वेदी चंद्रिका', ई-8/जी2/255

गुलमोहर कॉलोनी, भोपाल

(मध्यप्रदेश)

मोबा. 9826086879

ई-मेल :

sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्ति विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से मन की बात	6
संपादकीय	7
नया साल की कविताएं	9
खरमास (मल) में मांगलिक कार्य क्यों निषिद्ध हैं	13
हमारे पूर्व सभापति	14
मोटा अनाज, एक अमृत!	15
माँ	17
सभापति प्रत्याशियों का जीवन परिचय	20
शाखा समाचार	26
समाज समाचार	27
बिछड़े स्वजन	28

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

: Account No. :

1006238340

: IFSC Code :

CBIN0283533

: Branch :

Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVED



10292296@cbi

BHIM LPI

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा

आजीवन सदस्यता शुल्क

1000 + 501 = 1501/-

महासभा सत्र + पत्रिका

वार्षिक सदस्यता शुल्क -

101 + 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक शशांक चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।



अपनों से मन की बात

● डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी

Email : president@chaturvedimahasabha.in

कड़ाके की सर्दियों का दौर शुरू हो चुका है। सर्दियों अपने चरम की ओर बढ़ चली है। अमृत रूपी बारिश (मावठा) बरस रहा है। किसान मन ही मन हर्षित हैं व भविष्य में अच्छी फसल की कामना कर रहा है।

खरमास का उत्तरार्ध चालू हो चुका है। कुछ ही समय में मंगल कार्य प्रारंभ हो जाएंगे। कुछ ही समय बाद देश भर में मकर संक्रांति का पर्व भी मनाया जाएगा। देश के अलग अलग प्रान्तों में इसे अलग अलग नामों से खिचड़ी पर्व, उत्तरायण, पोंगल व लोहड़ी के नामों से भी जाना जाता है व अलग अलग परंपरा से परंपरागत तरीके से मनाया जाएगा। समाज में स्वस्थ लोकतंत्र की परंपरा

को निभाते हुए महासभा के नवीन सभापति के निर्वाचन हेतु चुनाव प्रक्रिया अपने अंतिम दौर में है। सभी मतदाताओं को मतपत्र कार्यक्रम में निश्चित तारीख पर रजिस्टर डाक द्वारा भेजे गए हैं। संपूर्ण चुनाव समिति श्री गोपाल कृष्ण जी (मैनपुरी/ नोएडा) के नेतृत्व में मुस्तैदी से अपना कार्य संपादित कर रही है। समाज का नेतृत्व करने वाले आगामी सभापति को भी मेरी तरह आपका आशीर्वाद अवश्य प्राप्त होगा।

समाज का निर्णय शिरोधार्य होगा। समाज का नया सभापति सेवक के रूप में आवश्यक सहयोग व नेतृत्व अपने सहयोगियों के सहयोग से प्रदान करेगा। साथ ही समाज को उन्नति की ओर ले जाएगा। ऐसा मेरा विश्वास है कि आप सभी के सहयोग से वह समाज की सभी आकांक्षाओं व उम्मीदों पर खरा उतरेगा।

हमारे बुजुर्गों द्वारा विपरीत, अप्रिय व संघर्षशील परिस्थितियों में बनाई गई सभा श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के अस्तित्व, औचित्य व कार्य क्षमता पर प्रश्नचिन्ह लगा दिए। प्रश्न चिन्ह वह लोग लग रहे हैं जिनके पास सेवा के नाम पर बताने योग्य कुछ नहीं है। कमी हो सकती है। आपकी अपेक्षा हमसे ज्यादा की हो सकती है। हो सकता है इस कमी की वजह आपका हमारे सहयोग व सामंजस में कमी रही हो। भविष्य में हम इस कमी को पूरा करने का प्रयास करेंगे। समाज प्रेम के कारण लोग यह कार्य करते हैं। इससे उन्हें कोई आर्थिक लाभ नहीं होता है। अन्नपूर्णा योजना, गुल्लक योजना के सतत व सुचारु संचालन में सहयोग हेतु आप सभी का बहुत-बहुत आभार। हमारे समाज की महासभा के मुख पत्र चतुर्वेदी चंद्रिका के सुचारु प्रकाशन में आप सभी के सहयोग का भी बहुत-बहुत आभार। हमारे समाज के लिए भी बड़े ही हर्ष का विषय है कि लंबी लड़ाई व न्यायिक संघर्ष के उपरान्त रामलला के नवनिर्मित मंदिर का अयोध्या में दिनांक 22 जनवरी 2024 को आरंभ होने जा रहा है। भगवान श्री राम हम सभी के आराध्य व पूजनीय देव हैं।

नववर्ष की मंगलकामनाओं के साथ

सूचना

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक आगामी प्रातः ११ बजे से 28 जनवरी 2024 कार्यक्रम हॉल, विवेक विहार (AWHO) सेक्टर 82, नोएडा दिल्ली (एन.सी.आर.) में आहूत की जाएगी। समाज हित में योगदान देने हेतु वर्तमान कार्यकारिणी के सभी सदस्य आमंत्रित हैं।

विस्तृत जानकारी आपको शीघ्र भेजी जाएगी। अन्य किसी सहयोग हेतु आप मुझसे संपर्क कर सकते हैं।

सादर पालागन

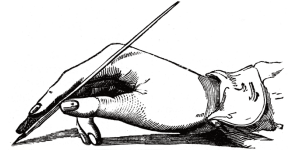
मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, मंत्री

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

मो. 98711 70559



संपादकीय



इस मौसम की कड़ाके की सर्दी का आरंभ हो चुका है। सर्दी अपने चरम की ओर अग्रसर है। इसी के साथ समाज में सभापति चुनाव की सरगर्मियां भी अपने अंतिम पड़ाव की ओर अग्रसर है। चुनावी मौसम के नित्य नए अंदाज आपके सामने प्रस्तुत हो रहे हैं। व्हाट्सएप के जमाने में घर बैठकर सलाह देने वाले बंधु हम लोगों का तरह-तरह के ज्ञानवर्धन कर रहे हैं। चुनावी समय में यह सब बातें एक आम बात है।

रोचक बात यह है कि एक मीटिंग में एक बंधु ने यह आरोप लगाया कि मेरे पूर्ववर्ती के समय में पत्रिका का वितरण उच्च कोटि का होता था, जो कि आज के समय में नहीं हो पा रहा है। शायद वह बंधु यह जानते नहीं थे कि उक्त समय वितरण समिति में मैं भी एक सदस्य था। एवम नियमित अपनी सेवाएं सतत रूप से दे रहा था। समाज सेवा कार्य से मैं लगभग 40 वर्ष से व महासभा से भी एक लंबे समय से जुड़ा हूँ। उस समय के युवा प्रकोष्ठ के मेरे सभी साथी आज महासभा के आकाश पर अपनी चमक में बिखेर रहे हैं। चतुर्वेदी चन्द्रिका पत्रिका का जब से भोपाल (2005) में प्रकाशन शुरू हुआ। तभी से मैं पत्रिका से जुड़ा हुआ हूँ तथा पत्रिका के वितरण में लगातार सुधार हेतु प्रयासरत हूँ, परंतु वर्तमान की परिस्थितियों में बहु मंजिला इमारतों व डाक विभाग का वितरण का कार्य निजी हाथों में जाने से समस्या थोड़ी बढ़ गई है। जिसके लिए डाक विभाग द्वारा पत्रिका रजिस्टर्ड डाक से भेजने की सुविधा प्रारंभ की गई है उस सुविधा का अतिरिक्त शुल्क 300/- प्रतिवर्ष देकर लाभ उठाया जा सकता है। साधारण डाक से रियायती दरों पर भेजने के कारण किसी की जवाब देही सुनिश्चित नहीं है। डाक न बँटने की स्थिति में वापसी का प्रावधान नहीं है। स्थानीय तौर पर पत्रिका की समस्या के समाधान हेतु मैंने अनेक प्रयास किये। अनेक सम्बद्ध शाखा सभाओं के प्रतिनिधियों के पास अतिरिक्त प्रतियां पुस्तक की रखवाई, लेकिन भविष्य में जिम्मेदार बांधवों के साथ एक वितरण समिति बनाने का विचार है।

इस चुनाव में अनेक बांधवों ने तरह-तरह के सुझाव दिए हैं जो भी बांधव इस वितरण समिति के अंतर्गत जिम्मेदारी लेकर कार्य करना चाहता उसका स्वागत है। उसके सहयोग व विचारों का हम खुले दिल से स्वागत करते हैं।

हमारा समाज बुद्धिजीवियों का समाज है। शिक्षित समाज है। इस पर हमें गर्व है। समाज के अनेक बांधव जो समाज सेवा का कार्य निस्वार्थ व निशुल्क कर रहे हैं, उनके प्रति प्रेम भाव रखें, क्योंकि वह अपने जीवकोपार्जन में से समय निकालकर निस्वार्थ समाज सेवा कर रहे हैं। अतः उनसे व्यवहार करते वक्त संयम रखें। जैसा व्यवहार हम अपने प्रति चाहते हैं, वैसा ही व्यवहार हमें दूसरों के साथ करना चाहिए।

समाज का चुनाव एक स्वस्थ लोकतंत्र का हिस्सा है। चुनाव आते जाते रहेंगे। व्यक्तिगत आरोपों से बचना चाहिए, क्योंकि चुनाव मतभेद के कारण होते हैं इसके कारण मन में भेद नहीं होना चाहिए। आरोपों के व्यक्तिगत होने से मन में खटास आती है व जीवन भर की दूरियां बन जाती हैं। अतः हमें अपना बड़प्पन दिखाते हुए इन सब कारणों का ध्यान रखना चाहिए। आखिर हम सब एक ही समाज के अंग हैं। आपस में रिश्तेदार भी हैं।

पालागन
(शशांक चतुर्वेदी)

चतुर्वेदी चन्द्रिका



श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा महासभा कार्यकारिणी - 2020-2023

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

संरक्षक : डॉ. सतीश चतुर्वेदी (नागपुर), श्री भरत चंद्र चतुर्वेदी (भोपाल) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्र आर. चतुर्वेदी, (मुम्बई) (पूर्व सभापति), श्री कमलेश पाण्डे (नोएडा) (पूर्व सभापति), ले. ज. विष्णुकांत चतुर्वेदी (नोएडा), श्री मदन चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री बालकृष्ण चतुर्वेदी (नोएडा), श्री विकास चतुर्वेदी (कानपुर)

सभापति : डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी (दिल्ली)

उप सभापति : श्री कैलाश चतुर्वेदी (कासगंज), श्री मनोज चतुर्वेदी (बैंगलोर), श्री विनोद चतुर्वेदी (मुम्बई)

मंत्री : श्री मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी (नोएडा)

संयुक्त मंत्री : श्री भरत चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री आशुतोष चतुर्वेदी (कानपुर), श्री अंशुमान चतुर्वेदी (जयपुर)

कोषाध्यक्ष : श्री महेश चतुर्वेदी (दिल्ली)

संपादक, चतुर्वेदी चन्द्रिका - श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल)

ऑडिटर - शिव एसोसिएट, नई दिल्ली

माननीय कार्यकारिणी सदस्य : श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (नागपुर), डॉ. कुश चतुर्वेदी (इटवा), श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल), श्री मनीष चतुर्वेदी (हरदोई), डा. राकेश चतुर्वेदी (मथुरा), डा. राजीव चतुर्वेदी (पुणे), श्री पंकज चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री सुशील पाठक (मुम्बई), डॉ. ऋषभ चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती बीना मिश्रा (हैदराबाद), श्री राकेश चतुर्वेदी (बरेली), श्री करुणेश चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री अजय चौबे (भोपाल), श्री प्रदीप चतुर्वेदी “लालन” (आगरा), श्री भुवनेश कुमार चौबे (गोंदिया), श्री पुनीत चतुर्वेदी (आगरा), श्री प्रदीप चतुर्वेदी “संजू” (गाजियाबाद), श्री ललित चतुर्वेदी (कोटा), श्री राहुल चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री विशाल चतुर्वेदी (पुरा), श्री गोविंद चतुर्वेदी (जयपुर), श्री गोविंद चतुर्वेदी (इंदौर), श्री ललित चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री अभयराज चतुर्वेदी (गुरुग्राम), श्री विनय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री अभिषेक चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री प्रवेश चतुर्वेदी (कानपुर) श्री नीलकमल चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री हेमंत चतुर्वेदी (नासिक), श्री अनिल चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री सुदीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री सुशील चतुर्वेदी (फरीदाबाद), डॉ. मनीष चतुर्वेदी (कोटा), श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री शिव नारायण चतुर्वेदी (कोटा), श्री विपिन चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री आशीष चतुर्वेदी (आगरा)।

स्थाई आमंत्रित सदस्य : श्री अविनाश चतुर्वेदी (कानपुर), श्री पदम कुमार चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री प्रताप चंद्र चतुर्वेदी (लोनी), श्री सुभाष चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री राजेंद्र प्रसाद चतुर्वेदी “अन्नी” (प्रयागराज), श्री मनमोहन चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री अशोक चतुर्वेदी (फरीदाबाद), श्री बिपिन पांडेय (गाजियाबाद), श्री कमलेश रावत (कोटा), श्री राहुल चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री प्रवीण चतुर्वेदी (हैदराबाद), श्री ईश्वर नाथ चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री अरुण चतुर्वेदी (जयपुर), श्री अमित चतुर्वेदी (मथुरा), श्री योगेंद्र चतुर्वेदी (ग्वालियर)।

विशेष आमंत्रित सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री गजेंद्र चौबे (दमोह), श्री दिनकर राव चतुर्वेदी (फरौली), श्री कौशल चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री मधुकर पाठक (आगरा), श्री चैतन्य किशोर चतुर्वेदी (फर्रूखाबाद), श्री संजय मिश्रा (कानपुर), श्री अम्बर पाण्डे (भोपाल), श्री अरुण चतुर्वेदी (नागपुर), श्री मुकेश चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री भारत भूषण चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शशिकांत चतुर्वेदी (आगरा), श्री अरविंद चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री महेंद्र चतुर्वेदी (जयपुर), श्री दिलीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री लेखेंद्र चतुर्वेदी “पुत्तन” (लखनऊ), श्री शशांक गिरीश चौबे (नागपुर), श्री संजय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री बसंत रमेश चौबे (भिलाई), श्री नितिन चतुर्वेदी (निम्बाहेड़ा), श्री राजेश चतुर्वेदी, “गुड्डू” (कोलकाता), श्री हर्ष मोहन चतुर्वेदी, “मोहित” (आगरा), श्री दिनेश चतुर्वेदी (बाह), श्री मनीष चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री मनोज मिश्रा (मैनपुरी), श्री संजय चतुर्वेदी (फरीदाबाद), श्री आशीष चतुर्वेदी, रानू (आगरा), श्री दीपक चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री आशीष सुभाष चतुर्वेदी (आगरा)।

महिला प्रकोष्ठ : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी (भोपाल) (संयोजक), श्रीमती नीलिमा चतुर्वेदी (कानपुर), श्रीमती विनीता चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती समता चतुर्वेदी (दोसा), श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती संध्या चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती अर्चना चतुर्वेदी (जयपुर), श्रीमती दीपाली चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती रश्मि चतुर्वेदी (नोयडा), श्रीमती अरुणा चतुर्वेदी (कोटा), श्रीमती कीर्ति मिश्रा (हैदराबाद), श्रीमती निधि चतुर्वेदी (आगरा)।

युवा प्रकोष्ठ : डॉ. मनीष चतुर्वेदी (कोटा), (संयोजक), श्री सुधांशु चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री रीगल चतुर्वेदी (भिंड), श्री दिवस चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री आशीष चतुर्वेदी (हावड़ा), श्री दुर्गेश चतुर्वेदी (जयपुर) श्री गगन चतुर्वेदी (पुरा), श्री पुलकित चतुर्वेदी (नोएडा), श्री सुनील चतुर्वेदी (जयपुर), श्री सावन चतुर्वेदी (आगरा)।

चिकित्सा प्रकोष्ठ : डॉ. संजय चतुर्वेदी (आगरा), डॉ. अरविंद चतुर्वेदी (दिल्ली), डॉ. निखिल चतुर्वेदी (आगरा)

आई टी प्रकोष्ठ : श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री प्रसून चतुर्वेदी (भुवनेश्वर)।

पता : 405-406, चिरंजीव टावर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली - 110019

नया साल की कविताएं

नया साल

ये साल भी चला
लो अब एक ओर वर्ष कम होने चला,
कुछ यादें कुछ मीठी बातें संग छोड़ चला..!
कुछ ख्वाहिशें दिल में रह जाती हैं..तो
कुछ बिन मांगे मिल जाती हैं..!

जीवन तो चलने का नाम है ..
गम और खुशी की बरसाते भी हो जाती हैं..

कुछ प्यारे हमारे, साथ छोड़ चले ..
कुछ रिश्ते नये जुड़े, कुछ तोड़ चले

कुछ मुझसे हुए बहुत खफा तो
कुछ बहुत खुश हैं इस दफा

कुछ ने मुझको भूला दिया तो
कुछ ने दोस्ती का जाम पिला दिया

कुछ मुझसे अनजान हैं..तो
कुछ बहुत परेशान हैं..!

कुछ को मेरा इंतजार है ..
कुछ का मुझे इंतजार है..!

कुछ गलत भी है तो
कुछ है सही ..
कुछ हैं संग भी है
कुछ है नहीं ..

कोई गलती हुई तो माफ कीजिये
और.., कुछ अच्छा लगे तो याद कीजिये..!!

- पूजा चतुर्वेदी, मुम्बई

स्वागत नव वर्ष का

आया नव वर्ष करें अभिनंदन
नवल रश्मियाँ अम्बर में

अर्चन कर रही अंजुल से
नव विहान लें सूरज निकला
मानव के संतुष्ट जीवन में

नव वर्ष में दृढ़ प्रतिज्ञा हो
नव संकल्प करें जीवन में
नवकिसलय नव पियूष
खिलते रहे सदा दुखी मन में

कार्य करो कुछ ऐसा हम
जो समाज हित में हो
उतना ही हम कथन करें
जो यथार्थ में सच हो

रफ़ता रफ़ता वक्त बीत गया
आधी छोड़ सारी कौ धाये
नहीं हम खुश रह पाए
नहीं खुशी सबको दे पाये।

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल

नववर्ष

नववर्ष तुम्हे मंगलमय हो
नव ऊर्जा का संचार रहे।
नव सूरज की नवल किरण,
नव जीवन का शृंगार करे।

नववर्ष तुम्हें
नव प्रभात का नव प्रकाश,
सुअवसरों को प्रकाश मिले।
नवपुष्प सजाये बगिया को,
पथ प्रगति शील निर्माण करे।
नववर्ष तुम्हें.....

नव कीर्ति जुड़े यश, वैभव में,
चहुँ ओर शान्ति का गीत बजे।
विश्व शान्ति का दे सन्देशा,
वो ही मधुरिम संगीत बने।

चतुर्वेदी चन्द्रिका

नववर्ष तुम्हें.....

अभय दान हो संतों को,
आशीषों का भी अंश मिले।
भूमि मुस्काकर नभ देखे,
बिटियों को सुरक्षा कवच मिले।
नववर्ष तुम्हें.....

नवतिथि में घर घर खुशी नयी,
हर घर में बिखरे खुशहाली।
बैरागी मन की यही कामना,
हर दिशा में बिखरे हरियाली।
नववर्ष तुम्हें.....

- सूर्य कान्त चतुर्वेदी (मोहन बैरागी)
(पुरा /टूण्डला /रिसड़ा)

नूतन वर्ष अभिनंदन

नव वर्ष तुम्हारा स्वागत है,
खुशियों की बस चाहत है।
नया जोश नया उल्लास,
खुशियां फैले, करे उजास।
ए नव वर्ष के प्रथम प्रभात,
दो सबको अच्छी सौगात।
ए नव वर्ष के प्रथम प्रभात
इतनी सी सुन लो मन की बात
आए न फिर डरावनी रात
मारे न कोई मजदूरों को लात
न आए मेरे देश में प्राकृतिक उत्पात
इतनी सी सुन लो मन की बात
नव वर्ष तुम्हारा स्वागत है।।

- मनीष चतुर्वेदी, इटावा/लखनऊ

अंग्रेजी के नए साल में

क्या ,कुछ ,कितना नया मिला है ?
फसलें बदलीं ?मौसम बदला ?
कुछ न बदला यही गिला है।।
अरे! नव्यत्ता कुछ तो होती
स्वेटर ही कुछ कम हो जाते।
कृपा भास्कर की हो जाती
तेवर ही कुछ नम हो जाते।।

आर्थिक साल नया हो जाता
पढ़ने को नई कक्षा होती।
बीच बर्फ जो खड़े हैं सैनिक
उनकी भी कुछ रक्षा होती।।
एक जनवरी आते ही हम
नया नया मिल चिल्लाते हैं।
बारह पर सुई आते ही सब
नव उमंग में आ जाते हैं।।
खूब पटाखे छोड़े जाते
केक खूब काटा जाता है।
करते हैं सब मिल जुल कोलाहल
खुशियों को बांटा जाता है।।
आंग्ल कलेंडर को पाते ही
हृदय पुष्प खिल खिल जाता है।
पर इतनी सी बात न समझी
नया हमें क्या मिल जाता है ?।।
अगर देखना हमें नवयता
नव संवत्सर देखो भाई।
मौसम बदले, फसलें बदलीं
धर दी जाती तभी रजाई।
नया नया शिक्षा सत्र होता
नया आर्थिक साल लगे।
चिल्ला जाड़ा भी जाता है
दिव्य सभी के भाल लगे।।
स्वागत सभी नव्य रूपों का
एक जनवरी पर भी हर्षायें।
कहें बधाई आपस में हम
और परस्पर मीठा खाएं।।
पश्चिम पर इतना न फूले
नव संवत् को न भूलें।।
बस इतनी सी विनती भाई।
आंग्ल वर्ष की खूब बधाई।।

- डा० कुश चतुर्वेदी, इटावा

सन २०२३-२०२४ नव वर्ष

गया वर्ष जाते हुए, देता यह संदेश।
विगत वर्ष से सीख कर, करें सुगम परिवेश।।

देश धर्म संस्कार युत, करें नवल निर्माण।
जन जन को ले साथ में, करें जगत कल्याण।।

चतुर्वेदी चन्द्रिका

विश्व प्रेम की भावना, फैलाएं चहुं ओर।
विश्व वंधुत्व प्रसार से, बंधें प्रीति की डोर॥

सब धर्मों का मान है, सबका ही सम्मान।
प्रेम और सद्भाव से, बनता राष्ट्र महान॥

मिटा आपसी भेद को, मना रहे नव वर्ष।
सबका ही सम्मान हो, सबका हो उत्कर्ष॥

सत्य सनातन धर्म यह, भारत की पहचान।
भारत के उत्कर्ष से, बढ़ता जग में मान॥

शान्ति प्रेम सद्भावना, का हो प्रादुर्भाव।
तिरंगा लहराता रहे, सदा रहे यह चाव॥

भिन्न-भिन्न भाषा यहाँ, भिन्न-भिन्न परिधान।
हम सब फिर भी एक हैं, जाने सकल जहान॥

– विद्युत प्रभा चतुर्वेदी 'मंजू'
देहरादून

नववर्ष

नव प्रभातकी बेला में
करती हूँ ये आशा
नव वर्ष बस खुशियाँ लाए
नहीं हो कोई निराशा

जो हो रही है तबाही चहुँ ओर
खत्म हो जाये इस बरस
बीमारी पीड़ा और युद्ध देखके
अच्छे दिन को गए तरस

राम लला पधार रहे है
खुशियाँ ला रहे है इस वर्ष
पूरे भारत में भारतवासी
दीप जला के हो रहे है हर्ष

वर्ष बदला दिन भी बदले
यही है दिल कि कामना
बहुत थक गए हैं यारों
दुख तकलीफ़ का करते सामना

संवत् बदले वर्ष भी बदले और
कुछ कुछ बदले हम सब भी
पूजा की ये विनती है आपसे
समय के साथ बदले हम सब भी

नया साल- 2024

नवल वर्ष तेरा अभिनंदन
माथे रोली अक्षत चंदन
नवल वर्ष तेरा.....

दुःख-दर्दों को बंद किया है
स्मृति के कुछ तहखानों में
स्मित को होंठो पर रक्खा
स्वप्न सजाए हैं आँखों में आर्तनाद को किया नियन्त्रित
रोक लिये हैं सारे क्रन्दन
नवल वर्ष तेरा अभिनंदन

उम्मीदों के कंधों पर है
डाली अपनी गर्म दुशाला
गत वर्षों के प्रतिवेदन रख
नवल वर्ष को दिया हवाला
सौंप दिया आगत के हाथों
तन-मन-धन जीवन रघुनन्दन
नवल वर्ष तेरा अभिनंदन

इतनी परिभाषाएँ पढ़कर
जीवन का सच भाँप लिया है
हम क्या हैं, कितने पानी में
यह बौनापन माप लिया है
अनुभव कहता है तपकर ही
सोना बन पाता है कुंदन
नवल वर्ष तेरा अभिनंदन
टाँग लिया हमने भी अपने
कमरे में इक नया कलेंडर
पन्ने पलट-पलट कर देखा
काल राशि का छद्म बवंडर
अभय दान देकर हे कर्ता !
कर दो तुम अमृत का मन्थन
नवल वर्ष तेरा अभिनंदन

– निरुपमा चतुर्वेदी 'रूपम', जयपुर

चतुर्वेदी चन्द्रिका

नया वर्ष आ गया

नया वर्ष है आ गया, प्रसन्नता चहुँ ओर।
खुशी भरा परिवेश है, सब हैं भाव विभोर।।

नये द्रव्य परिधान से, सजे हुए बाजार।
आपस में सब दे रहे, भिन्न-भिन्न उपहार।।

पुलकित सबके मन हुए, करें नृत्य अरु गान।
आपस में सब मिल रहे, रखते सबका मान।।

मंगलमय नव वर्ष हो, सबकी यही पुकार।।
सुख समृद्धि रहे सदा, सुखमय हो संसार।।

नहीं हमारा वर्ष नव, फिर भी है त्योहार।
चलो मनाएं हर्ष से, करें इसे साकार।।

यही सनातन धर्म है, सबका होवे साथ।
निभा रहे भ्रातृत्व हम, पकड़ हाथ में हाथ।।

मंगलमय नव वर्ष हो, सकल सृष्टि सानन्द।
सुखी रहे संसार जब, तब हो परमानन्द।।

दीप जला कर नेह का, मना रहे नव वर्ष।
सकल विश्व उन्नति करे, हो सबका उत्कर्ष।।

– विद्युत प्रभा चतुर्वेदी 'मंजू'
देहरादून

नए साल 2024का पहला दिन....

नया साल 2024का पहला दिन
स्वागत और अभिनन्दन दिन।
उषा काल का रश्मि कलश,
लाया नूतनता का नव दिवस।
जोड़ नया अध्याय दिवस।
सृष्टि चक्र आवर्तन में
नया साल 2024का पहला दिन।
स्वागत और अभिनन्दन दिन।
बीता दिवस हुआ धुंधला धुंधला
आया नया मारुत से सहला।
रहा नीरस सा ठहराव कोई,

सुख छुपा सदा परिवर्तन में
नया साल का पहला दिन,
स्वागत और अभिनन्दन में।
संवरा दे प्रकृति का तन मन
हो रूष्ट नहीं गत वर्ष कोई,
उन्नति आगत के संवर्तन में।
नया साल 2024 का प्रथम दिन,
स्वागत और अभिनन्दन में।
समय के इस नए परिवर्तन में,
स्वागत और अभिनन्दन में।।

– शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी, फिरोजाबाद

खरमास (मल) में मांगलिक कार्य क्यों निषिद्ध हैं

सूर्य के बृहस्पति की धनुराशि में गोचर करने से खरमास शुरू होता है। यह स्थिति मकर संक्रान्ति तक रहती है। धनु संक्रान्ति में मांगलिक कार्य नहीं होते हैं। जैसे ही सूर्य धनु राशि में प्रवेश करता है तभी से खरमास आरम्भ हो जाता है और इसी के साथ शादी विवाह एवं अन्य मांगलिक कार्य निषेध हो जाते हैं।

इस माह में सूर्य धनु राशि का होता है। ऐसे में सूर्य का बल वर को प्राप्त नहीं होता। माना गया है कि वर को सूर्य का बल तथा वधू को बृहस्पति का बल होने के साथ ही दोनों को चंद्रमा का बल होने से ही विवाह के योग बनते हैं। इस पर ही विवाह की तिथि निर्धारित होती है।

खरमास शुरू हो जाने से विवाह संस्कारों पर एक माह के लिए रोक लग जाती है। साथ ही अनेक शुभ संस्कार जैसे जनेऊ संस्कार, मुंडन संस्कार, गृह प्रवेश भी नहीं किया जाता है। खरमास में हमारे भारतीय पंचांग के अनुसार सभी शुभ कार्य रोक दिए जाते हैं। खरमास कई स्थानों पर मलमास के नाम से भी विख्यात है। शास्त्रों में मलमास शब्द की यह व्युत्पत्ति निम्न प्रकार से बताई गई है।

‘मली सन म्लोचति गच्छतीति मलिम्लुचः’

अर्थात् ‘मलिन (गंदा) होने पर यह आगे बढ़ जाता है।’

हिन्दू धर्म ग्रंथों में इस पूरे महीने में किसी भी शुभ कार्य को करने की मनाही है। जब गुरु की राशि धनु में सूर्य आते हैं तब खरमास का योग बनता है। वर्ष में दो मलमास पहला धनुर्मास और दूसरा मीन मास आता है। यानी सूर्य जब-जब बृहस्पति की राशियों धनु और मीन में प्रवेश करता है तब खर या मलमास होता है क्योंकि सूर्य के कारण बृहस्पति निस्तेज हो जाते हैं। इसलिये सूर्य के गुरु की राशि में प्रवेश करने से विवाह संस्कार आदि कार्य निषेध माने जाते हैं। विवाह और शुभ कार्यों से जुड़ा यह नियम मुख्य रूप से उत्तर भारत में लागू होता है, जबकि दक्षिण भारत में इस नियम का पालन कम किया जाता है। मद्रास, चेन्नई, बेंगलुरु में इस दोष से विवाह आदि कार्य मुक्त होते हैं।

खरमास में व्रत का करने का विशेष महत्व होता है। जो व्यक्ति खरमास में पूरे माह व्रत का पालन करते हैं उन्हें पूरे माह भूमि पर ही शयन करना चाहिए। एक समय केवल सादा तथा सात्विक भोजन करना चाहिए। इस मास में व्रत रखते हुए भगवान पुरुषोत्तम अर्थात् विष्णु जी का श्रद्धापूर्वक पूजन करना चाहिए तथा मंत्र जाप करना चाहिए। श्रीपुरुषोत्तम माहात्म्य की कथा का पठन अथवा श्रवण करना चाहिए। श्री रामायण का पाठ या रुद्राभिषेक का पाठ करना चाहिए, साथ ही श्रीविष्णु सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करना

शुभ होता है।

मास के आरम्भ के दिन श्रद्धा भक्ति से व्रत तथा उपवास रखना चाहिए, इस दिन पूजा — पाठ का अत्यधिक माहात्म्य माना गया है। इस मास में प्रारंभ के दिन दानादि शुभ कर्म करने का फल



आचार्य डा. सतीश जी महाराज, आगरा

अत्यधिक मिलता है, जो व्यक्ति इस दिन व्रत तथा पूजा आदि कर्म करता है वह सीधा गोलोक में पहुंचता है और भगवान कृष्ण के चरणों में स्थान पाता है। खरमास की समाप्ति पर स्नान, दान तथा जप आदि का अत्यधिक महत्व होता है। इस मास की समाप्ति पर व्रत का उद्घाटन करके ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए और अपनी श्रद्धानुसार दानादि करना चाहिए। इसके अतिरिक्त एक महत्वपूर्ण बात यह है कि खरमास माहात्म्य की कथा का पाठ श्रद्धापूर्वक प्रातः एक सुनिश्चित समय पर

करना चाहिए। इस मास में रामायण, गीता तथा अन्य धार्मिक व पौराणिक ग्रंथों के दान आदि का भी महत्व माना गया है। वस्त्रदान, अन्नदान, गुड़ और घी से बनी वस्तुओं का दान करना अत्यधिक शुभ माना गया है। खरमास की एक पौराणिक कथा प्रचलित है। यथा-लोक कथाओं के अनुसार खरमास (मलमास) को अशुभ माह मानने के पीछे एक पौराणिक कथा बताई जाती है। खर गधे को कहा जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार मार्कण्डेय पुराण के अनुसार एक बार सूर्य अपने सात घोड़ों के रथ को लेकर ब्रह्मांड की परिक्रमा करने के लिए निकल पड़ते हैं।

इस परिक्रमा के दौरान सूर्य देव को रास्ते में कहीं भी रूकने की मनाही होती है, लेकिन सूर्य देव के सातों घोड़े कई साल निरंतर दौड़ने की वजह से जब प्यास से व्याकुल हो जाते हैं तो सूर्य देव उन्हें पानी पिलाने के लिए निकट बने एक तलाब के पास रूक जाते हैं। तभी उन्हें स्मरण होता है कि उन्हें तो रास्ते में कहीं रूकना ही नहीं है तो वो कुंड के पास कुछ गधों को अपने रथ से जोड़कर आगे बढ़ जाते हैं। जिससे उनकी गति धीमी हो जाती है। यही वजह है कि खरमास को अशुभ माह के रूप में देखा जाता है।

जैसा कि ऊपर वर्णित किया गया है कि जब सूर्य के बृहस्पति की धनुराशि में गोचर होते हैं तब खरमास शुरू होता है तथा यह स्थिति मकर संक्रान्ति तक रहती है। दूसरे शब्दों में जैसे ही सूर्य धनु राशि में प्रवेश करता है तभी से खरमास आरम्भ हो जाता है और इसी के साथ शादी विवाह एवं अन्य मांगलिक कार्य निषेध हो जाते हैं। इस वर्ष 15 दिसंबर 2023 दिन 03:56 पर सूर्य के धनु राशि में प्रवेश करने से लेकर 14 जनवरी 2024 रात्रि 02:42 पर सूर्य के मकर राशि में प्रवेश करने तक खरमास रहेगा।

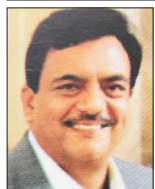
हमारे पूर्व सभापति

स्व0 राजेन्द्र नाथ चतुर्वेदी, कोलकाता



आपका जन्म स्व0 घनश्याम दास जी के पुत्र रूप में 7 जुलाई 1933 को होलीपुरा में हुआ। आपने शिक्षा दामोदर इंटर कॉलेज, होलीपुरा से पूर्ण की। शिक्षा पूर्ण कर आपने कार्यक्षेत्र कोलकाता एवं बिहार को चुना। कलकत्ता में नित्य व्यायाम आपकी दिनचर्या का अभिन्न अंग रहा बड़ाबाजार की संस्था व्यायामशाला के आप पदाधिकारी रहे। समाज में आप कोलकाता सभा के प्रारंभ से ही अभिन्न अंग रहे और मंत्री व सभापति के पद पर आसीन हुए। लेखन के प्रति भी आपकी विशेष रुचि रही। आपने 'रंगझर बरसै री' के द्वितीय संस्करण एवं 'पावस गीतिका' जैसे कलकत्ता सभा के प्रकाशनों का आपने संपादन किया। इसके अलावा आपने माथुर चतुर्वेदी महासभा का संक्षिप्त इतिहास एवं होलीपुरा का इतिहास जैसी पुस्तकों का भी लेखन एवं प्रकाशन किया। आप होलीपुरा विकास संघ के सभापति एवं मंत्री रहे। महासभा के सभापति के रूप में अन्नपूर्णा योजना, संविधान संशोधन, पालागन के स्टीकर और मेडल वितरण जैसे महत्वपूर्ण कार्य किये तथा महासभा का ध्वजा निर्माण कराया। फरुखाबाद शहर, तरसोखर, रिसड़ा एवं वृन्दावन जैसे स्थानों पर कार्यकारिणी की बैठकों का प्रथम बार आयोजन भी आपके सभापति तो कल में ही हुआ। आपके कार्यकाल में चतुर्वेदी चन्द्रिका के कई महत्वपूर्ण विशेषांक प्रकाशित हुए। होली एवं पावस गायनवादन में आपको महारत हासिल थी इन बैठकों में आप प्रथम पंक्ति में भाग लेते थे। गत 30 दिसम्बर 2022 को कलकत्ता में आपने अंतिम स्वांस ली। समाज में आप रज्जनजी के नाम से लोकप्रिय थे। आपका व्यक्तित्व स्वयं में एक संस्था से कम नहीं था।

श्री राजेन्द्र रमेश जी, मुंबई



महासभा के बत्तीसवें सभापति श्री राजेन्द्र रमेश जी का जन्म रमेश चन्द्र जी के पुत्र रूप में 20/04/1959 को झांसी में हुआ। आपका कार्यकाल सन् 2013 से सन् 2017 तक रहा। प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण कर सन् 1979 में आपने इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल की। प्रारंभ में आप बाबू भाई बड़ गायी जी के यहां लगभग पांच वर्ष तक सेवारत रहे। तत्पश्चात् सन् 1984 में आपने निजी व्यवसाय आरंभ किया तथा डायनेमिक बिल्डर नाम से कंपनी की स्थापना की। अपना व्यवसाय आरंभ करने से आपको ख्याति मिली जिससे आप मुंबई के स्थापित

बिल्डर के रूप में प्रतिष्ठित हुए। मुंबई में कई इमारतों के निर्माण के बाद सन् 1984 में आपने श्रीपति आर्केड नामक 45 मंजिली देश की पहली बड़ी इमारत का निर्माण किया। समाज में आप मुंबई सभा के सभापति रहे। आपके महासभा के सभापति के कार्यकाल में संविधान पारित किया गया। गोवा एवं हरिद्वार जैसे पर्यटन स्थलों पर कार्यकारिणी की बैठकों का आयोजन बड़ी उपलब्धि रही। इसके अलावा आपने महासभा का लोगो बनवाकर प्रदान किया। आपके उत्तम स्वास्थ्य के साथ दीर्घजीवी होने की कामना करते हैं। साथ ही समाज हित में आप इसी भांति सेवारत रहें यह आशा करते हैं।

श्री भरत चन्द्र चतुर्वेदी, भोपाल



आपका जन्म स्व0 दुर्गा प्रसाद जी के पुत्र रूप में पुरा में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण कर आपने इतिहास एवं समाजशास्त्र में एम0 ए0 की डिग्री हासिल करने के साथ एल0 एल0 बी0 की शिक्षा पूर्ण की। शिक्षा दीक्षा पूर्ण कर कार्यक्षेत्र केलिए आपने भोपाल को चुना और भोपाल में आपने वकालत करना आरंभ किया जहां आज आपकी गणना भोपाल के स्थापित वकीलों में की जाती है। इसके अलावा आप भोपाल शहर के प्रतिष्ठित समाज सेवियों में से एक हैं। आप लम्बे समय से भोपाल की विभिन्न राजनीतिक, धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में संलग्न रहते हैं। छात्र जीवन में आप भोपाल के छात्र नेता रहे तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक से भी जुड़कर आज भी सक्रिय हैं। खेल-संसार में हॉकी व फुटबॉल के आप अच्छे खिलाड़ी रहे हैं एवं शतरंज में भोपाल के चैंपियन रहे हैं।

आप सन 1991 से 1993 तक भोपाल बार एसोसिएशन के उपाध्यक्ष रहे। महासभा के अध्यक्ष के रूप में आपने कार्य समिति गठन में नवीनता एवं अभिनव प्रयोग के साथ युवा एवं महिला जैसे प्रकोष्ठों का गठन किया। अपने अध्यक्षीय कार्यकाल में जन जागृति हेतु आपने देश के कोने-कोने का भ्रमण किया। आपके कार्यकाल में जयपुर में एवं बाह में युवा सम्मेलन आयोजित किया गया। ग्रामोत्थान के उद्देश्य से ही पुरा में कार्यकारिणी की बैठकों का आयोजन आपके कार्यकाल से ही आरंभ हुआ।

आपके कार्यकाल में महासभा के आजीवन सदस्यों की संख्या एवं चतुर्वेदी पत्रिका के ग्राहकों की संख्या में काफी वृद्धि हुई। महासभा के संरक्षक के रूप में भी आपकी बैठकों में उपस्थिति प्रेरणास्पद है। आप दीर्घजीवी हों तथा समाज इसी भांति नित नई उर्जा प्रदान करते रहें।

मोटा अनाज, एक अमृत!

- चित्रा दिलीप चतुर्वेदी, भोपाल

मोटा अनाज (मिलेट) शब्द सुनते ही हम अपना बचपन याद आ गया। जब हम गर्मी की छुट्टियों में गांव जाया करते थे और भोजन में हमें ज्वार, बाजरा, चना और चुनी आदि के रोटी- पराठे अवश्य परोसे जाते थे। हमारे बार बार मना करने के बावजूद कि हमें नहीं खाना है, इसका स्वाद अच्छा नहीं है, हमारी सुनवाई नहीं होती थी। अपितु हमें ही इस अनाज के गुण एवं फायदे बता कर उसे खाने पर मजबूर कर दिया जाता था। और इस प्रकार से मक्का, बाजरा और बेझर आदि का बना भोजन हम सब खाना सीख गए। खाना ही नहीं सीखे अपितु यह हमें स्वादिष्ट भी लगने लगा। मिश्रित अनाजों के सेवन का ही नतीजा था कि पहले के लोग ज्यादा स्वस्थ रहते थे, क्योंकि गेहूं, चावल के साथ मोटे अनाज को भी रसोई में प्राथमिकता दी जाती थी। मोठे अनाजों में 8 अनाजों को जगह दी गयी है, इसमें बाजरा, ज्वार, रागी, कंगनी, कुटकी, कोदो, सवां और चना शामिल है। यह सभी मानव शरीर के लिए बहुत गुणकारी हैं। लोग इन अनाजों का सेवन अलग अलग विधि से करते हैं।

मोटे अनाज का उत्पादन भारत के लगभग सभी राज्यों में होता है लेकिन श्रीअन्न के उत्पादन के मामले में राजस्थान भारत के सभी राज्यों में आगे है। वहीं भारत के कुछ राज्य कुल 85% मोटे अनाज का उत्पादन करते हैं। मोटे अनाज में ओमेगा 3 फैटी



एसिड कि प्रचुर मात्रा होने के कारण हमें हृदय रोग से बचते हैं। मिलेट शरीर कि अम्लता को कम करता है। यह अनाज मेटाबोलिज्म को ठीक रखता है और शरीर को कैंसर से दूर रखता है। मोटे अनाज में कम ग्लिसेमिक इंडेक्स (ग आई) होता है और यह मधुमेह कि रोकथाम में मदद करता है। मोटे अनाज बढ़ते वजन को रोकने और उच्च रक्तचाप को रोकने में सहायक होते हैं। यह अत्यधिक पोषक, ग्लूटेन रहित, अम्ल रहित और गुणों से युक्त होते हैं। बच्चों और युवाओं में कुपोषण रोकने में यह मददगार होता है, इसके सेवन से प्रतिरक्षा और स्वास्थ्य को बढ़ावा मिलता है। यह फसलें आमतौर पर सीमान्त एवं असिंचित भूमि पर उगाई जाती है। इनकी उपज स्थाई खेती और फसल विविधीकरण को प्रोत्साहित करती है। मोटे अनाज अपने पोषक तत्वों के कारण काफी मशहूर हो रहे हैं। इन अनाजों का सेवन लोग पूड़ी, पराठा, रोटी आदि बना कर, कर रहे हैं, तो कुछ लोग नूडल्स, डोसा आदि बना का करते हैं। मक्का, बाजरा आदि कि रोटी और खिचड़ा आजकल दावतों में बहुत धूम मचा रहे हैं। मोटे अनाज कि उपयोगिता के प्रचार प्रसार करने के लिए इस विषय पर स्लोगन और कविताओं का भी सहारा लिया जा रहा है।

जैसे... मोटा अनाज अपनाओ, अपनी सेहत बढ़ाओ।

इस तरह के स्लोगन आम जनता के आकर्षण का केंद्र बन जाते हैं और लोग इन अनाजों को अपनी रसोई में स्थान प्रदान कर रहे हैं। आजकल कृषि विश्वविद्यालयों में किसानों के लिए

ज्यादातर प्रदर्शनी मिल्लेट्स उत्पादन और साइंस हेल्थ को लेकर कि जा रही है। खासकर रागी, जो, मंडुआ, बाजरा आदि अनाजों के उत्पादन पर जोर दिया जाता है।

मेले में अन्नपूर्णा देवी कि मूर्ती लगा कर किसानों को मानवीय और सामाजिक तौर पर जोड़ने कि कोशिश की जाती है।

भारत में ६-७ तरह के मोटे अनाज उगाये जाते हैं, जिसमें पर्ल मिलेट, फिंगर मिलेट, रागी, फाक्सटेल मिल्लेट्स, प्रोसो मिल्लेट्स, बारनयार्ड मिल्लेट्स, लिटिल मिल्लेट्स आदि हैं।

पुराने समय में इन अनाजों का प्रयोग बहुतायात में किया जाता था। इनका सेवन भारत की पर्यावरण स्थिति के अनुसार भी ज्यादा अनुकूल हैं। इनकी पैदावार में धान-गेहूं के मुकाबले कम पानी की आवश्यकता होती है। इन फसलों में रासायनिक फर्टिलाइजर आदि की भी आवश्यकता नहीं पड़ती। साथ ही इन फसलों की देखरेख में भी किसानों को कम मेहनत लगती है। श्री अन्न के आकार के आधार पर इसे दो वर्गों में बांटा गया है। बारीक श्री अन्न जैसे कोदो, कंगनी, रागी, कुटकी आदि शामिल हैं। ज्वार, बाजरा आदि मोटे दाने वाले श्री अन्न हैं। इसमें प्रचूर मात्रा में फाइबर पाया जाता है।

बाजरा खाने के फायदे

यह सहरीर के वजन को बढ़ने से रोकता है। इसका अधुलनशील फाइबर एक प्रो बायोटिक के रूप में काम करता है जो पाचन स्वास्थ्य को दुरुस्त करता है। यह मैग्नीशियम का छ स्रोत है, यह हृदय रोग एवं स्ट्रोक से बचाता है। यह मधुमेह को भी नियंत्रित रखता है।

ज्वार के सेवन से फायदे

ज्वार के आटे की रोटी खाने से गैस, कब्ज, दस्त और सूजन जैसी समस्याओं से लड़ने में मदद मिलती है। इसमें उच्च मात्रा में फाइबर होता है, जो खराब कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करता है और दिल के दौरे की सम्भावना को कम करता है। यह शरीर में इन्सुलिन और ग्लूकोज की मात्रा को नियंत्रित करता है। इसमें मौजूद आयरन लाल रक्त कोशिकाओं को बढ़ने के साथ हड्डियों को भी मजबूत करता है। इसकी खासियत है कि इसमें कैंसर रोधी गुण होते हैं। इसके नियमित सेवन से सिर की त्वचा और बाल को पोषण मिलता है। यह अनाज थाइमिन, रिमोफ्लेमिन, फोलेट, कैल्शियम, आयरन जैसे कई आवश्यक तत्वों से समृद्ध है जो आपकी त्वचा को स्वस्थ और चमकदार रखता है। इसको अपने आहार में शामिल करने से सूजन से जुड़ी बिमारियों में फायदा मिलता है।

रागी या मंडुआ

रागी अनाज का दूसरा नाम मंडुआ है। अनाजों में रागी को

नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। यह ग्लूटेन मुक्त है। इसमें प्रोटीन, फाइबर, आयरन, मिनरल और कार्बोहायड्रेट प्रचूर मात्रा में उपलब्ध है।

यही कारण है कि इसे सुपरफूड भी कहा जाता है। रागी का आटा गेहूं के आटे में मिला कर प्रयोग में लाया जाता है। इसके कई तरह के पकवान जैसे उपमा, सूप, बिस्कुट, डोसा आदि बनाया जाता है। यह एक गुणी औषधि भी है एवं इसका प्रयोग आयुर्वेद में किया जाता है। यह विभिन्न प्रकार के माइक्रो एवं मैक्रो न्यूट्रिएंट्स, आवश्यक फैट, विटामिन, प्रोटीन एवं मिनरल्स से भरपूर है।

मक्का

गेहूं और चावल के बाद यह भारत का सबसे महत्वपूर्ण अनाज है। इसका उपयोग चिप्स, कॉर्नफ्लेक्स, पॉपकॉर्न, रोटी, परांठे, पूरी आदि बनाने में किया जाता है। कहते हैं मक्के का एक एक दाना किसी औषधि से कम नहीं होता। इसके आटे की तासीर गरम होती है एवं इसका प्रयोग कई तरह से किया जाता है। मक्के में pro-tein, विटामिन, कैल्शियम, जिंक आदि पोषक तत्वों के गुण पाए जाते हैं। मक्का खाने से कोलेस्ट्रॉल कम होता है एवं धमनियों का ब्लॉकेज भी दूर होता है। मक्का में विटामिन और एंटी ऑक्सीडेंट एवं कॅरिनोडोइटे के गुण पाए जाते हैं जो आँखों की रोशनी बढ़ाने में मदद करते हैं। शरीर की ऊर्जा बढ़ाने में मक्के से बहुत मदद मिलती है क्योंकि इसमें उच्च मात्रा में कार्बोहायड्रेट पाए जाते हैं।

मोटे अनाजों की उपयोगिता पर नज़र डालने से हम पाते हैं कि इसका सेवन हमारे शरीर और स्वास्थ्य दोनों के लिए उत्तम है। यह हमारी हड्डियों को मजबूत करते हैं, वजन संतुलित करते हैं, पाचन दुरुस्त करते हैं। मोटे अनाज का सेवन मधुमेह एवं हृदय सम्बंधित रोगों से बचाव करता है। इसकी गरम तासीर का कारण यह हमें गरम रखता है एवं एनिमिक होने से बचाता है।

भारत दुनिया में, मोटे अनाज का सबसे बड़ा उत्पादक है। मौजूदा दौर में मोटे अनाज के व्यंजन शादी एवं पार्टियों में भी अपनी धाक बढ़ाते जा रहे हैं। युवा पीढ़ी का इसकी तरफ रुझान मन को खुश करता है। भारत सरकार ने 2023 को मोटा अनाज वर्ष घोषित किया है। इसके बावत कृषि विज्ञान केंद्र के विज्ञानी, किसान अन्नदाताओं को मोटे अनाज की खेती के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। विज्ञानियों की तरफ से किसानों को मोटे अनाज की खेती के लिए उचित जानकारी भी दी जा रही है। उन्नत बीज, बुआई की गहराई, समय और खेत की तैयारी आदि के विषय में किसानों को जानकारी दी जा रही है। वैज्ञानिकों का कहना है कि खरीफ की फसल के सीजन में किसान मोटे अनाज की अच्छी फसल प्राप्त कर सकते हैं। इसके आहार से जनमानस को बेहतर स्वास्थ्य एवं जीवन की बेहतर गुणवत्ता प्राप्त होगी।

सावन का महीना था। 2 दिन से लगातार बारिश हो रही थी और थमने का नाम नहीं ले रही थी। इससे आमजन को दिन- प्रतिदिन के कार्य में बेहद परेशानियों हो रही थी बच्चों को सुबह-सुबह स्कूल जाने में सबसे अधिक परेशानियां हो रही थी। रूपाली को वर्षा का मौसम बहुत प्रिय था वह बालकनी में बैठी बाहर का नजारा देख रही थी। सभी पेड़-पौधे झूम-झूम कर अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर रहे थे। सड़क के उस पार नीम और पीपल के वृक्षों को देखकर ऐसा लग रहा था, मानो दोनों एक दूसरे को गले लगाने के लिए बेचैन हो रहे थे। सुबह 4:00 बजे रूपाली के पति राजीव ट्रार पर चले गए थे। उनके चार वर्ष के बेटे नंदन को गत रात्रि में रूपाली की छोटी बहन अपने साथ यह कह कर ले गई थी कि माँ ने मुझे आपकी आपके पास इसी कारण से भेजा है, कि नंदन को लेकर आना। माँ और पापा को नंदन की बहुत याद आ रही थी।

बालकनी में नितान्त अकेली बैठी रूपाली का मन नहीं लग रहा था वह सोच रही थी, कि उसे भी माँ के घर चले जाना चाहिए था। मगर वह ऐसा नहीं कर सकती थी, क्योंकि शाम के समय वह बच्चों को ट्यूशन पढ़ती थी। बच्चों के टेस्ट चल रहे थे। रूपाली रसोई में गई और एक कप चाय बना कर ले आई। उसने मेज से कागज, पेन उठाया और गुनगुनाती हुई बालकनी में आ गई। रूपाली का कवि हृदय अपने मन मानस में हलचल कर रहा था।

मनोभावनाओं को कागज पर उकेरने करने के लिए बेचैन हो रहा था। एकांत में बैठकर चाय की चुस्कियां के साथ मनमोहक मौसम का चित्रण करने में उसे आत्म संतोष मिल रहा था।

इसी समय मोबाइल की घंटी बजने लगी। रूपाली ने अपना मोबाइल उठाया और देखा की राजीव का फोन आया था। रूपाली का दिल धक-धक करने लगा। वह सोचने लगी, कि अचानक इस समय राजीव का फोन कैसे आया ? राजीव की ऐसी आदत नहीं थी कि यूं ही फोन करें। जब कोई काम की बात करनी होती थी, वह तभी फोन करते थे। राजीव कहने लगे, रूपाली बहुत बुरा समाचार है! दीदी नहीं रही। इतना कहकर राजीव फफक फफक कर रोने लगे थे। उन्होंने मोबाइल बंद कर दिया था। रूपाली की समझ में नहीं आ रहा था, कि राजीव ने इस तरह का समाचार कैसे दिया था। कल रात तक तो दीदी से बात की थी उसे। समय वह एकदम ठीक थी व कह रही थी सब कामों से निवृत्त होकर बेडरूम में आई हूँ। तुम्हारे जीजाजी ने कहा है, कि कल सुबह पिकनिक पर चलेंगे। अतः सुबह जल्दी उठकर कुछ खाने का सामान बना लेना। सभी जल्दी सो जाते हैं। कल आपसे बात करेंगे।

रूपाली ने फुर्ती से राजीव को फोन लगाया और पूछने लगी, अरे राजीव, तुमने दीदी के बारे में ऐसा समाचार क्यों दिया ? मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा। रात तक तो मैंने दीदी से बात की थी। वह एकदम ठीक थी। मुझसे अच्छी तरह से बात की थी।

राजीव ने बताया, कि सुबह 4:00 बजे उठकर वह रसोई में गई थी। ना मालूम क्या हुआ, वह गिर पड़ी और बेहोश हो गई। धमाके की आवाज सुनकर जीजा जी रसोई की ओर भाग कर गए। दीदी को आवाज दी व उनके मुंह पर पानी के छीटें मारे, मगर व टर से मस नहीं हुई। जीजा जी बता रहे थे कि वह पूरी तरह बेहोश थी। जीजा जी ने गाड़ी में उन्हें लिटाया और तेजी से अस्पताल लेकर गए थे। डॉक्टर ने उनकी जांच की और झटके के साथ कह दिया कि अब हम कुछ नहीं कर सकते। उनकी जीवन लीला तो गिरने के क्षण ही समाप्त हो गई थी। राजीव ने रूपाली से कहा कि वह जीजा जी के पास पहुंच रहा है। तुम भी नंदन को अपनी मां के पास छोड़कर तत्काल रवाना हो जाना। रूपाली ने एक बैग में कुछ कपड़े डालते हुए, अपनी मां को यह दुखद समाचार देकर कहा, कि वह दीदी के घर जा रही है। आप नंदन का ख्याल रखना, वहां

पहुँचकर पुनः बात करेगी।

रूपाली ने टैक्सी बुलाई और तत्काल रवाना हो गई। वहाँ पहुँचकर, उसने देखा कि दीदी का शव घर के आंगन में एक चटाई पर रखा था। उन्हें देखकर लग नहीं रहा था, कि वह सब कुछ छोड़कर अनंत यात्रा पर चली गई थी। दीदी के सिरहाने अर्धविक्षिप्त अवस्था में जीजा जी बैठे हुए थे। वह एकदम गुमसुम थे। राजीव उनको ढाढस बनाने का भरसक प्रयास कर रहे थे, जबकि राजीव की हालत भी ठीक नहीं थी। मासूम बच्चों का रो-रोकर बुरा हाल था। रूपाली ने दोनों बच्चों को अपने गले से लगा लिया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था, कि वह बच्चों को कैसे समझाएँ। अचानक हुई दुर्घटना का समाचार सुनकर उनके घर में लोगों की भीड़ बढ़ती जा रही थी। व्यवस्था करने वाला वहाँ कोई नहीं था। जीजाजी सदमें की हालत में थे। रूपाली किसी को भी जानती नहीं थी। कुछ समय पश्चात एक अप्रत्याशित घटना हो गई जीजाजी निद्राल कर दीदी के शव के पास गिर पड़े और बेहोश हो गए। भीड़ में खड़े लोगों ने तुरंत डॉक्टर को फोन कर कर बुलाया। डॉक्टर ने आकर जीजा जी की अच्छी तरह से जांच करने के बाद मात्र दो शब्द, 'नो मोर बोले और गर्दन झुका कर चला गया।

पड़ोस की महिलाएं रूपाली से कहने लगी अरे आप उनके घर वालों को तो फोन करके सूचना दीजिए। महिलाओं की बात पर रूपाली निरुत्तर थी, क्योंकि रूपाली को जीजा जी के घर वालों के संबंध में कोई जानकारी नहीं थी। दीदी और जीजा जी ने लव मैरिज की थी। इस वजह से जीजा जी के घर वालों ने उनसे संबंध तोड़ लिए थे। नजदीक खड़े जीजा जी के एक रिश्तेदार ने कहा कि, मैं उन लोगों को समाचार देता हूँ। मेरे पास उनका फोन नंबर है। सज्जन ने जीजा जी के पिताजी को फोन करके इस दर्दनाक घटना की जानकारी दी। जीजा जी के पिताजी सुनकर उस सज्जन से क्रोधित होकर कहने लगे आपने मुझे फोन क्यों किया है, मेरे लिए तो मेरा बेटा उसी दिन मर गया था, जिस दिन हम लोगों के विरोध के बाद भी उसने उस लड़की से शादी की थी। इतना कहकर उन्होंने फोन काट दिया था।

बहुत ही गमगीन माहौल में दोनों का दाह - संस्कार की रस्म पूरी की गई। पड़ोसी और रिश्तेदार भी सब चले गए। राजीव और रूपाली की समझ में नहीं आ रहा था, कि वह दीदी के घर की व्यवस्था को कैसे संभाले। दोनों बच्चे प्रज्ञा और प्रखर बहुत छोटे थे।

इन बच्चों की परवरिश आप कैसे हो सकेगी? दीदी के ससुराल वालों के तटस्थ व्यवहार से बहुत बड़ी समस्या खड़ी कर दी थी। रूपाली दोनों बच्चों को अपनी छाती से लगाकर उन्हें ढाँढस बंधा रही थी। इसी तरह से 12 दिन व्यतीत हो गए। रूपाली और राजीव ने रीति-रिवाज के अनुसार सभी कार्य पूरे किए। अब इनको अपने घर वापस जाना था। रूपाली अपने मासूम बेटे नंदन को अपनी



आज के युग में हर व्यक्ति अपने आप में इतना व्यस्त है। स्वयं की समस्याओं में उलझा हुआ है। ऐसी स्थिति में अन्य के संबंध में सोचने की किसी को फुर्सत नहीं है। इन नादान बच्चों की जिम्मेदारी की विकट समस्या थी। विधाता ने इन मासूम, नादान बच्चों का सर्वस्व क्षण भर में समाप्त कर दिया था। दोनों बच्चों का विलाप असहनीय था। बच्चों के सो जाने पर रात्रि के समय राजीव में रूपाली से कहा, रूपाली, क्या तुम इन बच्चों की जिम्मेदारी ले सकोगी।

माँ के पास छोड़ गई थी।

आज के युग में हर व्यक्ति अपने आप में इतना व्यस्त है। स्वयं की समस्याओं में उलझा हुआ है। ऐसी स्थिति में अन्य के संबंध में सोचने की किसी को फुर्सत नहीं है। इन नादान बच्चों की जिम्मेदारी की विकट समस्या थी। विधाता ने इन मासूम, नादान बच्चों का सर्वस्व क्षण भर में समाप्त कर दिया था। दोनों बच्चों का विलाप असहनीय था। बच्चों के सो जाने पर रात्रि के समय राजीव में रूपाली से कहा, रूपाली, क्या तुम इन बच्चों की जिम्मेदारी ले सकोगी। आखिर हमारे अलावा अब इनका है ही कौन? रूपाली जड़वत होकर सब सुन रही थी। समस्या बहुत जटिल थी। वह मन ही मन स्वयं से प्रश्न कर रही थी कि क्या वह इन दोनों मासूम बच्चों की परवरिश ईमानदारी से कर सकेगी? अभी तक वह अपनी गृहस्थी की गाड़ी सुकून से चला रही थी। अब तीन बच्चों

की परवरिश करना आसान काम नहीं है। मगर इसके अलावा कोई अन्य रास्ता भी तो नहीं था। सगी बहन के मासूम बच्चों को अनाथ आश्रम में छोड़ने की कल्पना मात्र से ही राजीव सिहर उठा था। राजीव आंखों में आंसू भरकर कहने लगे, रूपाली अपने लिए तो सभी जीते हैं मगर सार्थक जीवन उसी का कहलाता है, जो दूसरों के लिए जीता है। अपने अलावा इन बच्चों का कोई और मुझे दिखाई नहीं दे रहा है।

रूपाली स्वयं भी इस बात को समझ रही थी। मृत्यु उपरांत के सभी क्रियाकलापों से को पूर्ण करके, दीदी के घर को ताला लगाकर, इन बच्चों को अपने साथ लेकर राजीव और रूपाली दुखी मन से अपने घर आ गए। रूपाली दोनों बच्चों का बहुत ध्यान रखती थी। समय का पहिया घूम रहा था। दोनों बच्चे अपनी मासूमियत से बेखबर अपनी उम्र से पहले ही बड़े हो रहे थे। घर बाहर सभी लोग राजीव-रूपाली की प्रशंसा करते। मगर कभी-कभी रूपाली का मन अपने स्वार्थ के लिए विचलित होने लगता था।

उसे अपने इकलौते बेटे नंदन के साथ दो बच्चों की परवरिश समान रूप से करनी पड़ रही थी। रूपाली की माँ जो कि इस शहर में रहती थी। उन्हें यह सब बर्दाश्त नहीं हो रहा था। जब एक दिन वह रूपाली के घर आई, तब रूपाली को समझाते हुए कहने लगी रूपाली तू अपने जीवन को इस तरह से कब तक दाँव पर लगाती रहेगी। दामाद जी से तो साफ शब्दों में क्यों नहीं कह देती, कि इस घर में या तो मैं रहूँगी या यह बच्चे। रूपाली मूक होकर अपनी माँ की बातें सुन रही थी। उसने इस संबंध में अपनी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं दी तत्पश्चात वह क्रोधित होकर कहने लगी, तू एकदम मूर्ख है। अपने परिवार के संबंध में क्यों नहीं सोचती। कब तक इन बेगानों के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करती रहेगी। अपनी जहर भारी अनर्गल बातों से रूपाली की माँ उनकी खुशहाल जिंदगी में कांटा चुभोकर चली गई। बड़ी मुश्किल से उसने अपने आप को संभाला था। रूपाली की माँ ने उसकी शादी एक इंजीनियर से यह सोचकर की थी की शादी के बाद उनकी बेटी का जीवन बहुत ही शान शौकत के साथ व्यतीत होगा। जब तब उसकी माँ खोद-खोद कर उससे राजीव की कमाई का हिसाब पूछती रहती थी।

रूपाली के पिता बहुत ही ईमानदार और उसूलों के पक्के व्यक्ति थे। यही वजह थी कि उन्होंने अपने मन अनुकूल व्यक्ति राजीव के साथ रूपाली की शादी की थी। राजीव बहुत ही ईमानदार और अपने उसूलों के पक्के होनहार इंसान थे। रूपाली की माँ के अपने पति के साथ कभी अच्छे संबंध नहीं रहे थे। दोनों के स्वभाव में जमीन आसमान का अंतर था। उनकी जिंदगी की गाड़ी हिचकोले खाते हुए चलती रही। रूपाली की नस-नस में अपने पिता की शिक्षा दीक्षा का पूरा प्रभाव था। रूपाली और राजीव दोनों समान स्वभाव के व्यक्ति थे। रूपाली के लिए अब मात्र नंदन ही उसका

बेटा नहीं था, बल्कि वह स्वयं को तीनों बच्चों की माँ ही समझती थी। रूपाली की माँ ने उससे कहा कि उसे एक बच्चे का चांस और लेना चाहिए। उनका कहा था कि अपने बच्चे अपने ही होते हैं उनसे खून का रिश्ता होता है। रूपाली ने अपनी माँ को साफ शब्दों में कह दिया, माँ अब मैं तीन बच्चों की माँ हूँ। मुझे बच्चों की फौज नहीं तैयार करनी। मैं अपने तीनों बच्चों के साथ बहुत खुश हूँ। आप आगे से इस तरह की बातें मुझे नहीं करें। इसमें मेरी और आपकी दोनों की भलाई होगी।

प्रज्ञा और प्रखर धीरे-धीरे बड़े हो रहे थे। दोनों बच्चे अपनी उम्र से अधिक समझदार थे। प्रज्ञा अपनी पढ़ाई के साथ-साथ घर के कामों में रूपाली की मदद करने लगी थी। एक दिन उसने रूपाली से कहा मामी अब आप ट्यूशन करना छोड़ दीजिए, जो बच्चे आपके पास पढ़ने आते हैं उनको अब मैं पढ़ाया करूँगी। प्रज्ञा की बात सुनकर रूपाली ने कहा, अरे बेटा, तुम ऐसा क्यों कह रही हो ? जैसा चल रहा चलने दो। रूपाली का कहना था, कि ऐसा करने पर समाज के लोग नाते रिश्तेदार ना मालूम क्या-क्या कहने लगेंगे। आज तक जो लोग मेरी सराहना करते हुए थकते नहीं हैं, उन्हीं लोगों द्वारा मुझे आलोचना का शिकार होना पड़ेगा। यह कहकर रूपाली ने साफ शब्दों में प्रज्ञा से इनकार कर दिया। इस समय राजीव आ गए और कहने लगे कि समाज के डर से तुम ऐसा कैसे सोच सकती हो। हमें किसी से डर कर नहीं जीना है। हम अपने कर्तव्यों को ईमानदारी के साथ पूरा कर रहे हैं। प्रज्ञा की ओर मुखातिब होकर राजीव कहने लगे बेटी प्रज्ञा आज शाम से ही तुम ही बच्चों को ट्यूशन पढ़ाओगी। रूपाली के पास घर का काम कम नहीं है। रूपाली कहने लगी, सुनिए प्रज्ञा घर के कामों में भी तो मेरी सहायता करती है। शायद आपको मालूम नहीं। राजीव कहने लगे ठीक है, सब बच्चों को समान रूप से घर के सभी कामों में हाथ बताना चाहिए।

एक शाम अजीब घटना हुई। प्रज्ञा और प्रखर दोनों बच्चे हाथ जोड़कर रूपाली के समक्ष खड़े हो गए। रूपाली ने पूछा, अरे तुम दोनों क्यों खड़े हो, कुछ बताओगे कि नहीं। दोनों एक स्वर में कहने लगे मामी हम दोनों आपसे एक अनुमति मांगने आए हैं, क्या आप हमारी मांग को स्वीकार करोगी ? रूपाली की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। उसने मुस्कुराते हुए कहा, हां, पहले मुझे बताओ कि तुम्हारी मांग क्या है? बच्चों ने कहा आज से हम आपको मामी नहीं बल्कि मां कह सकते हैं। क्या इतना सुनते ही रूपाली ने दोनों बच्चों को अपनी छाती से लगा लिया। उसकी आंखों से झर झर आंसू बहने लगे। बच्चे पूँछने लगे मामी आप रो क्यों हो रही है। यदि आप नहीं चाहेंगे तो हम मां कहे तो नहीं कहेंगे। प्लीज चुप हो जाइए। ऐसा कहते हुए दोनों बच्चे मामी के आंसू पोंछने लगे। एक पल रुक कर रूपाली कहने लगी, हां बच्चों तुमने सही कहा, मैं तुम्हारी मामी नहीं बल्कि माँ ही तो हूँ।

सभापति प्रत्याशियों का जीवन परिचय (चुनाव समिति द्वारा प्रदत्त)



श्रीमती उषा चतुर्वेदी एडवोकेट

पति का नाम- श्री भरत चतुर्वेदी एडवोकेट
(पूर्व सभापति एवं वर्तमान संरक्षक, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा नई दिल्ली)

जन्म - 1 जनवरी 1950

शिक्षा- एम ए, बी एड, एल एल बी।

पता- बीएम - 57 करुणा धाम आश्रम के सामने, नेहरू नगर भोपाल, (म.प्र.) - 462003

जीवन का उद्देश्य

- * बेटियों की शिक्षा एवं समाज की मजबूती व उन्नति के लिए निरंतर कार्य करना।
- * सामाजिक चुनौतियों का समाधान निकालना तथा सर्वमान्य समाधान हेतु प्रयास करना।

सामाजिक प्रशासनिक गतिविधियाँ

- 1- सन 1994 से 2004 तक (10 वर्ष) भोपाल नगर पालिका निगम की पार्षद एवं स्थाई समिति की सदस्य
- 2- अध्यक्ष मध्य प्रदेश राज्य समाज कल्याण बोर्ड सन 2004 से 2007 तथा 2008 से 2011 तक।
- 3- अध्यक्ष, मध्य प्रदेश राज्य बाल अधिकार एवं संरक्षण आयोग।
- 4- निवसेट नई दिल्ली की मध्य प्रदेश की सदस्य
- 5- मध्य प्रदेश राज्य की प्रदेश स्तरीय महिला एवं बाल विकास पुरस्कार चयन समिति की सदस्य।

सामाजिक सेवा

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष (दो बार)
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के महिला प्रकोष्ठ की राष्ट्रीय संयोजक।

सांस्कृतिक गतिविधियाँ

भोपाल चतुर्वेदी महिलाओं के समूह गुड़ियाँ द्वारा बसंत पंचमी उत्सव (कोरोना से पूर्व लगातार तीन वर्ष)। चतुर्वेदी समाज के परंपरागत गीतों का रंगारंग कार्यक्रम एवं सहभोज का आयोजन।
करोनाकाल के प्रतिबन्ध के उपरान्त समाज की धरोहर पारंपरिक गीत, कजरी एवं मल्हार, भजन, लांगुरिया। समाज के विभिन्न संस्कारों पर गाए जाने वाली गीतों का कार्यक्रम। ऑनलाइन जूम एप पर। कार्यक्रम में भारत के विभिन्न प्रांतों व विदेशों की बहनों की भी सक्रिय भागीदारी रही। कार्यक्रम में आदरणीय सभापति डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी जी की उपस्थिति ने बहनों का उत्साह बढ़ाया।

उपलब्धियाँ

- 1- श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, दिल्ली द्वारा समाज सेवा एवं राजनीति में विशेष उल्लेखनीय कार्य हेतु वर्ष 2005 में पंडित श्री नारायण चतुर्वेदी राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान
- 2- श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा द्वारा राष्ट्रीय सेवा पदक वर्ष 2013
- 3- श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2013 में चतुर्वेदी श्री सम्मान
- 4- समाज सेवा के क्षेत्र में राज्यस्तरीय स्व. लाडो देवी स्मृति सम्मान
- 5- संस्कार भारती महानगर ग्वालियर द्वारा 19 नवंबर 2006 को प्रदेश स्तरीय वीरांगना सम्मान
- 6- मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति भोपाल द्वारा उत्कृष्ट सेवाओं के क्षेत्र में राज्य स्तरीय महिला समाज सेवी सम्मान। से सम्मानित किया गया।

साहित्यिक क्षेत्र

सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक क्षेत्र के अतिरिक्त साहित्य लेखन की विभिन्न विधाओं में अभिरुचि एवं लेखन कार्य विभिन्न

चतुर्वेदी चन्द्रिका

साहित्यिक संस्थाओं की सदस्य

- 1- मध्य प्रदेश से हिंदी लेखिका संघ की सदस्य
- 2- साहित्य परिषद मध्य प्रदेश की सदस्य।
- 3- प्रज्ञा प्रवाह महिला आयाम की सदस्य।
- 4- सकलपर्णा की सदस्य।

प्रकाशित पुस्तक

- 1- स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगनाएं।
- 2- *वैदिक काल की विदुषियाँ

प्राप्त पुरस्कार

- 1- दैनिक समाचार पत्र पत्रिका द्वारा आयोजित चार प्रदेशों की लघुकथा प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार
- 2- प्रेम शंकर रघुवंशी फाउंडेशन हरदा द्वारा रचनात्मक उपलब्धि एवं कहानी लेखन में पुरस्कार
- 3- मध्य प्रदेश हिंदी लेखिका संघ द्वारा काव्य पाठ में द्वितीय पुरस्कार
- 4- मध्य प्रदेश हिंदी लेखिका संघ द्वारा संस्मरण लेखन में द्वितीय पुरस्कार

विभिन्न समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के साथ समाज के मुख पत्र चतुर्वेदी चन्द्रिका में रचनाओं व लेखों का विगत 6 वर्षों से सतत प्रकाशन

(आत्मकथ्य)

घोषणा पत्र

- 1- प्रवासी चतुर्वेदी परिवारों का सम्मेलन करने की योजना।
- 2- बृहद महिला सम्मेलन करने की योजना राष्ट्रीय स्तर पर।
- 3- युवा सम्मेलन जिसमें युवकों के साथ युवतियाँ भी शामिल हो सकती है।
- 4- पारिवारिक विघटन की समस्या के निदान का प्रयास।
- 5- महासभा के आजीवन तथा कुल क्रमागत सदस्यों की संख्या बढ़ाने हेतु कार्य।
- 6- शाखा सभाओं के समाज के बीच निरंतर गतिशीलता बनाने के प्रयास।
- 7- समाज के रीति रिवाज एवं सांस्कृतिक धरोहरों को सुरक्षित रखने हेतु विभिन्न कार्यक्रम।
- 8- शासकीय योजनाओं से समाज लाभान्वित हो उसके लिए कार्य।



श्रीमान सुमंत चतुर्वेदी

Sumant Chaturvedi Late Shri S.N. Misra71, Krishan Vihar, Brij Vihar Phase 4 KamlaNagar, Agra Retired as Senior Manager From Bank Of India Social Activity :- Regularly in touch & active in social activities & remained executive member of Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha in tenure of 2017-20.

मेरी प्यारी दीदी (विनम्र श्रद्धांजलि: ऋणी चतुर्वेदी)

3 जनवरी – आज पाँच महीने हो गए.. ऐसा लग रहा है कि मानो युगों से दीदी से बात नहीं हुई। फोन पर बातें तो दीदी से शायद कभी भी ज्यादा नहीं हुईं पर समय समय पर मैसेज के द्वारा मिलती उनकी सलाह की मानो आदत सी हो गयी थी।

कभी सोचा भी नहीं था कि ये भी समय आएगा, कभी दीदी के लिए भी हमें, कुछ ऐसा लिखना पड़ेगा। वो तो हमेशा से हमारे ही साथ थीं। न जाने कब वो हमारे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन गई थीं, पता ही नहीं चला...

क्या क्या या किस किस विषय पर उनसे, हमने सलाह नहीं ली? अपनी शादी के समय से लेकर, अब अपने बच्चों के विवाह के समय तक के इतने लंबे समय में, मेरा मन, अनायास ही उनकी तरफ ही चला जाता था जब भी कभी मैं असमंजस की स्थिति में होती थी ये बिल्कुल अलग ही बात है कि मेरे पूछने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी, उन्हें पता नहीं कैसे, मेरी परेशानियों का आभास हो जाता था और मेरी दुविधा दूर करने के लिए वो एकदम तत्पर हो उठती थीं।

दीदी, एक बहुत अच्छी चित्रकार होने के साथ साथ, अनेकों कलाओं में पारंगत थीं। गर्मियों की छुट्टियों में जब भी, हम लोग, अपने मामाजी के पास, सहारनपुर जाते थे, माँ का यही निर्देश रहता था कि इस बार, ऋणी से यह सीखकर आना। माँ की इस बात को स्वीकार कर, मैंने, दीदी से बहुत कुछ सीखा था और अपना आभार भी प्रकट किया था, पर अब मैं, इसे अपना परम सौभाग्य समझती हूँ कि हम लोगों से अंतिम विदाई से कुछ ही दिन पहले, जब दीदी का, मेरे पास आना हुआ था, तो मैंने, उन्हें, पुनः, इस सत्य से एक बार परिचित कराया था। इन कलाओं के साथ साथ दीदी के पास एक अनूठी नेतृत्व क्षमता थी। इसी कारण जब भी हम सब का कहीं मिलना होता था, हम सब अनजाने ही उनका अनुसरण करने लग जाते थे, वो आदतन हमारी नेता बन जाती थीं और उनके नेतृत्व में हम सब अपने आप को सहज व सुरक्षित महसूस करने लगते थे।

दीदी, एक आकर्षक व्यक्तित्व की स्वामिनी थीं। सदा हस्ती व हम लोगों को है वाली दीदी की बेझिझक बात करने की आदत उन्हें सबकी प्रशंसा का पात्र बनाती थी। उनके सुनाये हुए कई क्रिस्से हमारे परिवार में बहुत ही सहजता से सुनाए व सुने जाते हैं

और अनेकों बार हम सब इकट्ठे बैठ खूब हँसे हैं। आज के ज़माने में अक्सर लोग मज़ाक़ का बुरा मानते हैं पर दीदी और मेरा रिश्ता कुछ अलग था और ऐसा शायद ही कभी हुआ हो कि उन्हें मेरी बात का या मुझे उनकी किसी बात का बुरा लगा हो।

पहनने ओढ़ने की शौकीन, मेरी दीदी की ठसक ही निराली थी। अपने साथ साथ, उन्हें हम लोगों का भी खूब ध्यान रहता था। एक समय था जब हमारी माँ, उनके साथ ही बाज़ार जाकर, हम लोगों के लिए तरह तरह की चीज़ें लाया करती थीं। दीदी को भी, हम लोगों की छोटी सी छोटी ज़रूरत का एहसास रहता था और वो किसी भी तरह से उसे पूरा करने का प्रयास किया करतीं थीं। उनके पास जाएँ और बाज़ार का एक चक्कर न लगे, ये तो असंभव था फिर वो चाहे दिल्ली हो या हमारा सहारनपुर।

बच्चों के साथ प्रायः उनके पास जाना होता था। मिलने पर, दीदी की अनुभवी व पारखी दृष्टि, पता नहीं कैसे सब कुछ परख लेती थी। शिखा... ये ऐसे कर रहा है.. इसको डॉ को दिखाना.. देर मत करना, शिखा.. ये ऐसे करना. शिखा.. इस पर ध्यान दो.. आदि कितनी ही बातों से वो हम लोगों का मार्गदर्शन किया करतीं थीं।

कितना प्यारा साथ था हमारा, कितने अनमोल क्षण, उनके साथ गुजारे हैं हमने। हम दिल्ली में हैं उन्हें मालूम हुआ और उनकी गाड़ी और ड्राइवर, हमें लेने आ जाता था। हम भी बच्चों के साथ पहुंच जाते थे, मज़े करने।। खिलाने की शौकीन, हमारी दीदी, मेरे और बच्चों के मनपसंद व्यंजन परोस तैयार खड़ी मिलती थीं हम लोगों का इंतज़ार करतीं हुईं। बच्चों को दिल्ली घुमाने का काम तो उन्होंने, अपने आप, अपने ऊपर ही ले लिया था।

दुःख ही नहीं, अत्यंत दुःख है.. जिसको हमारा इतना ध्यान था.. जो हमारे लिए इतना सजग था... हम उस की ही परेशानी नहीं समझ पाए। उसका बिगड़ता स्वास्थ्य, हमें क्यों समझ नहीं आया। वो इतनी दूर चली गई और हम कुछ भी नहीं कर पाए... मैं.. बहुत नाराज हूँ दीदी.. इतनी भी क्या जल्दी थी हम लोगों को छोड़ कर जाने की.. हम सब से बिछड़ने की..।

—शोकाकुलः शिखा मिश्रा (मुम्बई)

(र.क्र.2082)



संध्या मिश्रा: एक प्रेरणादायक कहानी

यह जनवरी, मेरी माँ को गुजरे हुए तीन साल हो गए। एक तरह से उनको मैंने खोया है, और एक तरह से नहीं भी। इस परिपेक्ष में एक सवाल मन में कई बार उमड़ता है: किसी को खोने का क्या मतलब है? अब भी, मेरी माँ हर समय मेरे साथ रहती हैं – चाहे वह रसोई में खाना बनाते समय हो, बाजार में फल या सब्जी लेते हुए, खूबसूरत वादियों के बीच घूमते हुए, या अमरीका की अनगिनत पेंटिंग की गैलरियों में फोटो खींचते हुए। मैं व्यावहारिक रूप से उन्हें महसूस कर पता हूँ। इसी बीच वह सवाल उठता है: मरण के वास्तविक प्रभाव को कैसे सोचा जाये?

जवाब उतना मुश्किल नहीं है। मेरे खयाल में: इंसान मरने के बाद खत्म नहीं होते बल्कि एक कहानी की तरह ज़िंदा रहते हैं। और हमारा सारा जीवन इशारा करता है कि हम उन लोगों के लिए किस तरह की कहानी होंगे जिनसे हमें ज़िन्दगी में मिलने का अवसर मिला। तीन साल बीत जाने के बावजूद, मैं जिस किसी से भी बात करता हूँ – मेरी माँ के दोस्त, सहकर्मि, पड़ोसी या परिवार के सदस्य — उनकी कहानियाँ हमेशा प्यार भरी और मीठी ही होती हैं।

इसमें शामिल उनके जीवन में सीधे तौर पर आने वाले लोग ही नहीं, बल्कि दूर के रिश्तेदार भी हैं – सभी की उनके साथ एक कहानी है। कुछ को याद है कि कैसे वह लगन से उन्हें भोजन परोसती थी; दूसरों को याद है कि कैसे जरूरत के समय मेरी माँ अपना सब भुला कर उनकी मदद में लग जातीं। कुछ और उन्हें दूसरी माँ के रूप में सोचते हैं, जिन्होंने उन्हें प्यार दिया और रहने के लिए छत भी। माँ सबसे प्रेम से बात करती थीं — और सब उन्हें मोह, ममता, और प्रेम भरी कहानी की तरह याद करते हैं।

माँ के जीवन से मैंने यह भी सीखा कि मृत्यु के बाद हम एक कहानी नहीं बल्कि कई कहानियाँ एक साथ बन जाते हैं! माँ के आधिकारिक रवैये की कहानियों को याद किया जाता है क्योंकि उन्होंने इसका इस्तेमाल दूसरों की भलाई के लिए किया। उनके स्नेह के किस्से इसलिए याद किए जाते हैं कि किसी जरूरतमंद को उन्होंने बेहद बेझिझक प्यार मुहैया कराया। उनके गुस्से की कहानियों को याद किया जाता है क्योंकि उन्होंने इसे अपने दिल में एक अच्छी जगह से इस्तेमाल किया था!

मुझे एक ऐसी माँ का बेटा होने पर गर्व महसूस हो रहा है, जो इतने सारे लोगों के लिए इतनी सारी कहानियाँ हैं। उनकी सुंदरता उनके पहने हुए कपड़ों में नहीं, बल्कि छोटे, बड़े, बूढ़े, युवा, उनके करीब या उनसे दूर हर किसी के साथ जुड़ने में सक्षम होने में है।

मैंने अपनी माँ के जीवन से बहुत कुछ सीखा है। वह एक



मजेदार रसोइया, एक अविश्वसनीय चित्रकार, एक खुशमिजाज यात्री और एक जिम्मेदार घरेलू महिला थी। कुल मिलाकर, वह एक अविश्वसनीय माँ थी! इस प्रकार, हर बार जब भी मैं कुछ भी करता हूँ, मेरी माँ हमेशा मेरे साथ होती हैं और मेरे साथ रहती हैं। उनकी मृत्यु भी एक अविस्मरणीय शिक्षा रही है: एक जिसने मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि मैं किस तरह की 'कहानी' बन कर याद रहना चाहूँगा। मेरी माँ ने इस पर भी कई जवाब दिए हैं – अपने कार्यों के माध्यम से – और मुझे आशा है कि मेरी तरह ही – हम सभी उनके समृद्ध जीवन से सीख सकते हैं – एक ऐसा व्यक्ति बनने में जो हम न केवल अपने जीवन के दौरान बल्कि उसके बाद भी बने रहें! – प्रखर मिश्र

(र.क्र.2107)

बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी दोनों भाई



दोनों भाइयों श्रीनाथ और त्रिलोकीनाथ ने मैनपुरी (उ.प्र.) निवासी श्री ओंकारनाथ और श्रीमती कुन्तीदेवी की संतानों के रूप में जन्म लिया था।

श्रीनाथ चतुर्वेदी एडवोकेट, मैनपुरी के अन्दर एक नामचीन हस्ती का नाम था, जिन्होंने अपने अध्ययन काल से ही अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए आगरा डिग्री कॉलेज के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया। मैनपुरी नगर पालिका में भी पार्षद के रूप में पदासीन होकर जनसेवा कार्य को तन्मयता के साथ किया। वे प्रखर ओजस्वी वक्ता थे। 10 दिसंबर 2016 को वे अपने जीवन संघर्ष को विराम देकर अनंत यात्रा की ओर प्रस्थान कर गए।

छोटे भाई त्रिलोकीनाथ अपने गृहनगर मैनपुरी और कार्य स्थल दतिया म.प्र. दोनों जगह अपने स्वाभाव से मधुर संबंध आजीवन कायम रखा। अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में बहुमुखी प्रतिभा के धनी रहे। दतिया डिग्री कॉलेज के प्रथम अध्यक्ष रहे। तदांतर में पत्रकारिता, वकालत, राजनीति, समाजसेवा, कविता हर क्षेत्र में दक्षता हासिल कर एक मुकाम पर पहुंचे। लोकतंत्र की रक्षा हेतु 20 माह जेल में निरुद्ध रहे।

पत्रकार संघ, अभिभाषक संघ, केशव बाल विकास समिति

(सरस्वती शिशु मंदिरों की जिले की संचालन समिति) के 2 कार्यकाल अध्यक्ष रहे। कई समाचार पत्रों सहित स्वदेश समाचार पत्र में मानसेवी तथा म. प्र. शासन के अधिसूचित पत्रकार रहे। किसी गरीब पैरोकार के आ जाने पर उसे कभी निराश नहीं लौटने दिया श्री पीताम्बरा माँ के वे अनन्य भक्त थे। प्रखर ओजस्वी वाणी और लेखनी दोनों पर एक साथ उनका नियंत्रण था। अनेक समाजसेवी संस्थाओं, शासन की समितियों के सहयोग से हमेशा जनसेवा की। दतिया में लॉ (विधि) के प्राध्यापक भी रहे।

सभी परिवारजनों, इष्टमित्रों, रिश्तेदारों के बीच अमिट छाप हमेशा के लिए छोड़ कर 27 दिसंबर 2021 को इस नश्वर संसार से विदा ली।

भगवान दोनों भाइयों की आत्मा को शांति दे। उनकी यादें उनके अपनों के बीच चिर स्मरणीय हैं। दोनों को सादर श्रद्धांजलि।

– श्रीमती आशा (पत्नी), त्रिदेव, नवेंदु, अनुव्रत, निवेदिता, नंदिता, डॉक्टर अणिमा (पुत्र एवं पुत्रियाँ) – स्व. श्री त्रिलोकी नाथ, दतिया (म. प्र.) मोब. 7999867085, 7974320313.

– नवेंदु चतुर्वेदी, दतिया (र.क्र.2108)

मेरे प्यारे बाबा

मेरे बाबा (स्वर्गीय श्री दयानंद चतुर्वेदी) बड़े ही सीधे, सरल एवं शांत व्यक्तित्व के धनी थे। अपने शांत व्यक्तित्व के कारण ही गाँव के लोग उन्हें *स्वामी* कहते थे।

8 जनवरी 2024 को मेरे बाबा का 94 वाँ जन्म दिन है। यूँ तो मेरे बाबा केवल मेरे जीवन के 11 वर्षों तक ही मेरे साथ थे। इस छोटी सी अवधि में भी उन्होंने मुझे बहुत कुछ सिखाया। जब मैं चार-पाँच वर्ष का था, मेरे बाबा मुझे रेलगाड़ी दिखाने ले जाया करते थे, जिसके कारण खेल-खेल में मुझे वक्त की पाबंदी समझ में आ गई थी। ट्रेन दिखाने के साथ-साथ वहाँ पड़ी रेत पर एक डंडी की सहायता से वह मुझे हिंदी और इंग्लिश के अक्षर लिखना भी सिखाते थे।

मेरे बाबा को हमेशा से ही नई चीज़ सीखने और सिखाने का बहुत शौक था। बचपन में मुझे एक्सीलेटर से बहुत डर लगता था, तब एक दिन वह मुझे डीबी मॉल ले गए। वहाँ एक्सीलेटर पर हमने इतने चक्कर लगाए कि मेरा डर एक ही दिन में दूर हो गया। मुझे साइकिल चलाना भी मेरे बाबा ने ही सिखाया। वह गर्मी की छुट्टियों में मुझे हिंदी और इंग्लिश की डिक्टेशन दिया करते थे। मेरे बाबा के सभी सात भाइयों में आपस में बहुत ही लगाव एवं अपनापन था।

जब बाबा बीमार थे, उन्होंने घर पर ही मेरी दादी को अपने छोटे भाई (जो उस वक्त पुरा में रहते थे) से मिलने की इच्छा जताई। दूसरे ही दिन पुरा से बाबा (आदरणीय स्व. हेमचंद जी) अचानक भोपाल आ गए। यह था भाइयों का प्रेम जो बिना कहे ही एक दूसरे की भावना समझ जाते थे। सभी भाइयों से मिलने के तीन दिन पश्चात ही मेरे बाबा भगवान की शरण में चले गये। उन्हें मुझसे और मुझे उनसे बहुत ही हार्दिक लगाव था।

जब उन्हें लगा कि उनका अन्तिम समय निकट है तो उन्होंने अपने तीनों छोटे भाइयों से कहा कि मेरे छोटे नाती का ध्यान रखना। वह मेरा जाना बर्दाश्त नहीं कर पाएगा। मेरे तीनों

आदरणीय छोटे बाबाओं, छोटी दादी एवं मेरी दादी ने मुझे इस दुख से निकलने में मेरी बहुत मदद की। आज तक आदरणीय दिवाकर बाबा एवं आदरणीय भरत बाबा हर क्षेत्र में मेरा मार्गदर्शन एवं उत्साहवर्धन करते हैं। जिसके कारण मैं उन दोनों में अपने बाबा की छवि को महसूस करता हूँ।

मेरी छोटी दादी (आदरणीय उषा चतुर्वेदी) भी मेरा बहुत ख्याल

रखती हैं और मेरी फरमाइशें भी पूरी करती हैं। आज मैं एक मनोविज्ञान विषय का छात्र हूँ। अपने लेख के माध्यम से मैं आप सब से एक बात कहना चाहता हूँ। जिस तरह मेरे बाबा के साथ मेरा लगाव और उसके बाद उनका छोड़कर जाना मेरे लिए एक कठोर समय था। मेरे आस-पास मेरे तीनों छोटे बाबा, छोटी दादी और मेरी दादी का साथ था। परंतु कभी-कभी ऐसे सत्य का सामना करते समय परिवार के या कुछ आसपास के बहुत निकट के सदस्य बच्चों को इस विकट परिस्थिति में मानसिक रूप से सहारा देने की बजाय और ज्यादा डरा देते हैं। जिससे एक छोटे बच्चे के मन मस्तिष्क पर गलत प्रभाव पड़ता है। ऐसे उच्च कोटि के सम्मानियों से निवेदन है कि वे छोटे बच्चों की भावनाओं से ऐसे ना खेलें कि उनका भविष्य अंधकारमय हो जाए। आप बच्चों को सत्य से अवगत अवश्य

करायें, उन्हें मजबूत बनाये परन्तु उनकी उम्र और भावनाओं को ध्यान में रखकर। ऐसे लोग शायद मानसिक रोगी होते हैं, जिन्हें अपनी भावना प्रकट करना तो आता है परन्तु दूसरे की भावनाओं को समझना उनके लिए कठिन होता है या शायद आता ही नहीं। अंत में यही कहना चाहूँगा कि आज भी जब कोई कठिन परिस्थिति आती है तो एक अदृश्य शक्ति के रूप में बाबा हमेशा मेरे साथ होते हैं। उनको मेरी भावभीनी श्रद्धांजलि एवं प्रणाम।

-मितार्थ चतुर्वेदी, भोपाल

(र.क्र.2089)



शाखा समाचार

भोपाल

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी भोपाल में चतुर्वेदी समाज की पिकनिक एवं होली मिलन के आयोजन हेतु कार्यकारिणी की वार्षिक बैठक इस बार श्री विकास चतुर्वेदी (मौली) के यहाँ हुई। बैठक में चर्चा कर सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि इस वर्ष पिकनिक का आयोजन 24 दिसंबर 2023, रविवार को एवं होली मिलन का आयोजन 31 मार्च 2024, रविवार को हर्षोल्लास से किया जाएगा। (स्थान व समय सहित विस्तृत जानकारी शीघ्र व्हाट्सएप पर साझा की जाएगी)। बैठक में अन्य विभिन्न विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई।

एक और महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा के दौरान श्रीमती उषा चतुर्वेदी को महासभा के सभापति पद के प्रत्याशी के लिए भोपाल शाखा सभा के द्वारा उनका नाम प्रस्तावित किया गया।

लगभग 100 वर्ष के इतिहास में यह प्रथम अवसर है कि समाज की एक महिला महासभा की सभापति बनेगी, इसलिए सभी भोपाल वासियों से अनुरोध है कि अपना अमूल्य वोट देकर सहयोग प्रदान करें।

अवगत करना चाहेंगे, जैसा कि पिछले वर्ष पिकनिक एवं होली मिलन के आयोजन में भारी जन समुदाय ने उत्साह पूर्वक शामिल होकर दोनों कार्यक्रमों को सफल बनाया। वैसे इस बार भी भोपाल चतुर्वेदी समाज के समस्त बांधवों से दोनों आयोजनों में सपरिवार शामिल होकर उल्लास एवं उत्साह के साथ सफल बनाने का अनुरोध, श्री माथुर चतुर्वेदी भोपाल शाखा सभा की सम्पूर्ण कार्यकारिणी की तरफ से है। वार्षिक बैठक में मौजूद श्री अनिल जी, दीपक जी, प्रेम जी, श्रीमती सीमा जी, गजेंद्र पांडे जी, अंबर पांडे जी, शशांक जी (संपादक, चतुर्वेदी चन्द्रिका), हरीश जी, नीरव जी, श्रीमती गार्गी जी, श्रीमती सपना जी, अर्जुन जी, राहुल जी, भरत जी (संरक्षक, महासभा), सुमंत जी (अध्यक्ष) एवं विशेष रूप से आमंत्रित श्रीमती उषा जी एवं अन्य गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति थी। स्वादिष्ट स्वल्पाहार की व्यवस्था के लिए विकास जी और परिवार के सदस्यों का आभार व्यक्त कर बैठक संपन्न हुई।

- हरीश चतुर्वेदी, सचिव

विशेषांक

दामोदर इंटर कॉलेज

९० वें वर्ष की यात्रा

दामोदर इंटर कॉलेज के ९० वर्ष की यात्रा संपूर्ण करने के उपलक्ष्य में चतुर्वेदी चन्द्रिका एक विशेषांक जनवरी २०२४ भूतपूर्व छात्रों द्वारा प्रायोजित कर प्रकाशित किया जा रहा है। इस के लिए आप स्वयं के तथा किसी अन्य परिवार के सदस्यों के संस्मरण / यादें / अनुभव एक लेख के रूप में 15 जनवरी 2024 तक प्रेषित कर विशेषांक को एक संग्रह योग्य संकलन तथा अविस्मरणीय बनाने तथा इसके प्रकाशन में सहयोग करें। आप के पास यदि को इस विशेषांक के उपयुक्त चित्र हो तो वह भी भेज दें।

प्रकाशन के लिए

श्वेत / तथा श्याम पृष्ठ 3000/-

रंगीन पेज 6000/-

सामग्री / लेख

संकलन कर्ता

मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी

व्हाट्स ऐप 9871170559

- जयपुर के डॉ हेमन्त चतुर्वेदी को विश्व प्रतिष्ठित FRCP London रॉयल कॉलेज ऑफ फिजिशियंस लंदन की फेलोशिप प्रदान की गई है। उन्हें ये फेलोशिप चिकित्सा क्षेत्र में उनके सराहनीय कार्यों एवम अभूतपूर्व योगदान के लिए दी गई है। उनके अनेकों राष्ट्रीय एवम अंतरराष्ट्रीय शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं जिन्हें काफी सराहना मिली है। वर्तमान में आप Eternal hospital में सीनियर कंसल्टेंट नॉन इनवेसिव कार्डियोलॉजी के पद पर कार्यरत हैं।



- स्व. बाबू श्री ओमकार नाथ चतुर्वेदी (होलीपुरा/कानपुर) की स्मृति में, स्व. श्री प्रभात कुमार चतुर्वेदी (इटावा) की स्मृति में एवं स्व. श्री सतीश चतुर्वेदी (इटावा) की स्मृति में श्री विकास चतुर्वेदी, चुन्ना भैया (कानपुर) द्वारा (प्रत्येक की स्मृति में 12000/- रुपये केवल) अन्नपूर्णा योजनार्थ 36000/- प्रदान किये। (र.क्र.2066)
- सौ. सुप्रिया (सुपुत्री साधना-राकेश नाथ (कोलकाता/मथुरा) एवं चि.आदित्य सुपुत्र श्रीमती प्रीति- श्री पंकज चतुर्वेदी (इटावा/आगरा) के साथ दिनांक 7/12/2023 को आगरा में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आपने महासभा सहायतार्थ 2100/- पत्रिका सहायतार्थ 2100/- कुलदेवी मंदिर सहायतार्थ 1100/- प्रदान किया। बधाई। (र.क्र.-2085)
- सौ. अदिती सुपुत्री श्रीमती मोहिनी - अनिल जी (होलीपुरा/रिसड़ा) एवं चि.आभिषेक सुपुत्र श्रीमती सपना- श्री शिवलाल चतुर्वेदी (मथुरा) के 27/11/2023 को मथुरा में सम्पन्न हुए शुभ विवाह के उपलक्ष्य में श्रीमति मोहिनी चतुर्वेदी द्वारा 500/- चतुर्वेदी चन्द्रिका एवं 150/- महाविद्या हेतुसहायतार्थ प्रदान किए। हार्दिक बधाई। (र.क्र.-2086)
- आज दिनांक 08 अक्टूबर 2023 रविवार को श्री माथुर चतुर्वेदी समाज इटावा की एक शोक सभा मंदिर हटिया इटावा पर संपन्न हुई। उक्त बैठक में समाज के वरिष्ठ बांधव श्री सुभाष चंद्र चतुर्वेदी हथकांत/इटावा की धर्मपत्नी श्रीमती आशा चतुर्वेदी के मुंबई में दुखद निधन पर शोक व्यक्त किया गया। सभी उपस्थित बांधवों ने कहा कि स्वर्गीया एक धर्मप्राण, मृदुभाषी, व्यवहार कुशल महिला थीं। उनका निधन समाज की भी बड़ी क्षति है। दिवंगत आत्मा की शांति एवम व्यथित परिवार के लिए धैर्य धारण की प्रार्थना की गई। सभा

में दो मिनट के मौन के बाद तय किया गया कि इस शोक प्रस्ताव की एक प्रति श्री सुभाष चंद्र जी के मुंबई स्थित आवास तक किसी भी माध्यम से पहुंचा दी जाए। बैठक में अंबरीश जी, नवीन जी, गुल्लन जी, अवधेश जी, मुकुल जी, अशोक जी आदि सम्मिलित रहे।

- **संशोधन :** दिसंबर 2023 अंक में प्रश्न क्रमांक 25 पर प्रकाशित आलेख में लेखक का नाम- ले. ज. विष्णुकांत चतुर्वेदी, नोएडा पढ़ा जावे।
- चि. अनिरुद्ध सुपुत्र श्रीमती अनिता - श्री विजय चतुर्वेदी सुपौत्र स्व. श्रीमती शकुन्तला- स्व. श्री रामनारायण चतुर्वेदी (ग्वालियर/कोटा) का शुभविवाह सौ. रुपाली सुपुत्री श्रीमती अनिता - श्री नितेश चतुर्वेदी (उचाड़/डबरा) के साथ दिनांक 23 नवम्बर 2023 को कोटा में सौल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आपने चन्द्रिका को 501/- सहयोगार्थ प्रदान किये। बधाई।
- चि. रिशव सुपुत्र श्रीमती उन्नति - श्री चन्द्रकान्त चतुर्वेदी होलीपुरा/आगरा एवं सौभाग्यवती रितिका सुपुत्री श्रीमती बृजेश - श्री विवेकहरी चतुर्वेदी मैनपुरी/दिल्ली के 28/11/23 को वृन्दावन में सम्पन्न हुए शुभ विवाह के उपलक्ष्य में श्री चन्द्रकान्त चतुर्वेदी द्वारा 501/- चतुर्वेदी चन्द्रिका हेतुसहायतार्थ प्रदान किए। -हार्दिक बधाई। (र.क्र. - 2098)
- चश्री सुमंत चतुर्वेदी (मैनपुरी/आगरा/मुंबई) द्वारा अपने पिता स्व. नरेश चंद्र चतुर्वेदी एवं माता श्रीमती हीरा चतुर्वेदी की स्मृति में 5001/- रुपए अन्नपूर्णा सहायतार्थ प्रदान किये। (र.क्र.2067)

बिछड़े स्वजन

- * श्री यतेंद्र कुमार चतुर्वेदी जी स्व. कृष्ण कांत (मथुरा/ग्वालियर) का स्वर्गवास दिनांक 17 दिसम्बर 2023 को ग्वालियर में हो गया।
- * श्री दीपक मिश्रा (लंबे गुड्डू) सुपुत्र स्व. रमेश चंद्र मिश्रा (मैनपुरी) का स्वर्गवास दिनांक 08 दिसंबर 2023 को हो गया।
- * श्रीमति बीना चतुर्वेदी पत्नि श्री गिरीश चतुर्वेदी (जयपुर) का स्वर्गवास 16.12. 2023 को हो गया।
- * श्री शरद चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. सतीश चंद्र चतुर्वेदी (मिश्राना,मैनपुरी) का स्वर्गवास दिनांक 09 दिसंबर 2023 को हो गया।
- * श्रीमती शारदा चतुर्वेदी पत्नी स्वर्गीय श्री वीरेंद्र चतुर्वेदी इटावा का निधन रात्रि में हो गया।
- * श्रीमती नर्मदा जी पत्नी स्व. कुलपत राय जी (चन्द्रपुर/लखनऊ) का स्वर्गवास 30 दिसंबर 2023 को लखनऊ में 95 वर्ष की हो गया।
- * श्रीमती माधुरी चतुर्वेदी पत्नी स्व पद्माकर राव चतुर्वेदी (होलीपुरा / कानपुर) का स्वर्गवास दिनांक 25 नवंबर 2023 को 91 वर्ष की आयु में हो गया।
- * कुमारी अदिति चतुर्वेदी पुत्री श्री मनीष चतुर्वेदी एवं प्राची चतुर्वेदी (तालगांव) दिल्ली में स्वर्गवास दिनांक 29/12/2023 को लगभग 7 वर्ष की अल्प आयु में हो गया।
- * श्री बृजेश चन्द्र जी (इटावा/लखनऊ) का स्वर्गवास 26 नवम्बर 2023 को लखनऊ में हो गया।
- * श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी (बेबी) पत्नी श्री राकेश चतुर्वेदी (फरौली/दिल्ली) का स्वर्गवास लगभग 62 वर्ष की आयु में आज 4 जनवरी को दिल्ली में हो गया।
- * श्रीमती शारदा देवी चतुर्वेदी पत्नी स्व. श्रीमान हरिवल्लभ जी चतुर्वेदी (बीगोद) का स्वर्गवास दिनांक 26 -11 -2023 को हो गया।
- * श्री सुभद्रा चतुर्वेदी पत्नी श्री सतीश चन्द्र चतुर्वेदी (होलीपुरा/गाजियाबाद) का स्वर्गवास 87 वर्ष की आयु में दिनांक 04 जनवरी 2024 को हृदय गति रुक जाने के कारण हो गया।
- * श्री अजय चतुर्वेदी पुत्र स्वर्गीय श्री ओंकारनाथ चतुर्वेदी (तरसोखर/ भिंड) का स्वर्गवास दिनांक 1 दिसम्बर 2023 को हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चन्द्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि



जन्म : 01.07.1938

निर्वाण : 19.12.2020

स्व. श्री देवेन्द्र नाथ चतुर्वेदी

पुत्र स्व. श्री लक्ष्मी चंद चतुर्वेदी एवं स्व. श्रीमती मुन्नीदेवी (होलीपुरा / कानपुर)

तृतीय पुण्यतिथि पर सादर नमन

आपका आशीर्वाद हम सब पर हमेशा बना रहे। आपकी बातें,
आपकी सादगी, आपका मार्गदर्शन हमें हमेशा प्रेरणा देता रहेगा।

श्रद्धावजनन



श्रीमती पुष्पा (पत्नी स्व. श्री लोकेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, भाई)
श्रीमती नीरा (पत्नी स्व. श्री किशोर चतुर्वेदी, भाई), लखनऊ
नीता – शिशिर मिश्रा (पुत्री – दामाद), जालंधर
श्वेता – मनोज (भतीजी – दामाद), दोहा, यूएई
प्रत्यूष – कोमल (भतीजा – बहू), लखनऊ
प्रतीचि – आशीष (भतीजी – दामाद), लखनऊ
प्रयास (भतीजा)
ऋषभ – शुति (धेवता – बहू), अयान (पुत्र ऋषभ), गुरुग्राम
मेघना – अजय (धेवती – दामाद), गुरुग्राम
राघव, पीहू, मालव्य, ध्रुव, आरव तथा वासुदेव (नाती, नातिन)



2ए/178, आजाद नगर, कानपुर, 208002
मो.: 7814686353 / 8699015479



सुख, शांति, स्वतंत्रता दिलाएं हर घर में खुशियों के फूल खिलाएं

हमारा प्रजासत्ताक हमारा अभिमान है. देश का गौरव है, हर भारतीय की शान है.
और हर परिवार का सम्मान होती है घर की महिला, घर की लक्ष्मी.

हमारी यही कामना और संकल्प है, की देश के हर परिवार की, हर महिला सक्षम हो,
उसका जीना सुखकर हो. खाना पकाना हो, या समय बचना हो,
उसको हर आधुनिक संसाधन मिले. किसी तरह की तकलीफ ना पहुंचे.
रेखा गैस भारतीय प्रजासत्ताक को वंदन करता है, और आधुनिक
भारत के निर्माण में योगदान देने का संकल्प करता है।

प्रजासत्ताक दिन की शुभकामनाएं!



● दु. नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001 फोन: (0257) 2221095,
● 2221195, 2225195, 2228495. | ● rekhasgas20032003@rediffmail.com

malhar.org

(र.क. 2024/2104)



पुण्यात्मा, श्रीमती नीलम आमोद चतुर्वेदी

पुत्री – श्री रामस्वरूप एवं श्रीमति शांती देवी चतुर्वेदी

बाह, धर्मशाला वाले

पत्नी – श्री सुनीत चतुर्वेदी, भरूच, गुजरात

पुत्री कनक चतुर्वेदी (चेन्नई)

पुत्र विवेक चतुर्वेदी (पोलैंड)

का स्वर्गवास 3 दिसम्बर 2023 को हुआ।

उनकी याद में कुछ पंक्तियां

मां गुलाब हैं

मां गुलाब हैं

मैं तो सिर्फ पंखुड़ी गुलाब की।

दुनिया की हर जटिलता को सरल कर लिया

ऐसी सादगी है आपकी

कांटों में भी खिलना-महकना

ये थी खासियत आपकी

प्रेम भरी यादों में डूबी रहेगी

अब जिन्दगी वीरान सी

आप गुलाब हैं

मैं तो सिर्फ पंखुड़ी गुलाब की।



HAPPY NEW YEAR

नव वर्ष की पावन बेली में डे चढ़ी, शुभ संदेश, हव दिन आए आयके,
जीवन में लेके खुशियां विशेष, नववर्ष की शुभकामनाएं।



डॉ. सतीश चतुर्वेदी



सौ. आशा चतुर्वेदी



दुष्यंत चतुर्वेदी



सौ. शीतल चतुर्वेदी



सौ. पल्लवी चतुर्वेदी



अमीर चतुर्वेदी